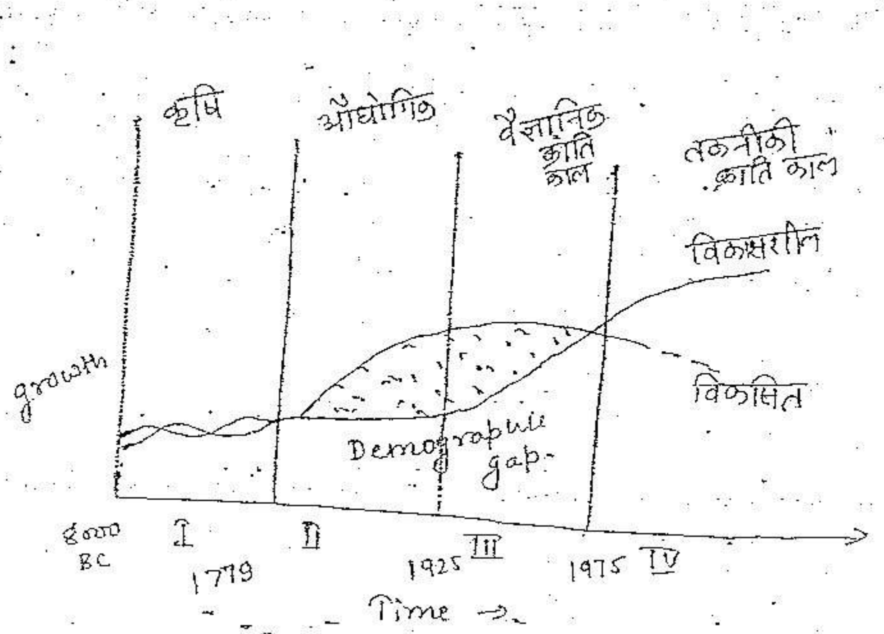

<u>जनसंख्या का वितरण</u> :- उत्तरी गोलार्द्ध में 3/4 th भूखण्ड है जबकि 90% जनसंख्या निवास करती है क्योंकि यहाँ विश्व का 99% Ecumene (निवास स्थल) है।

<u>Ecumene</u> → Intensive → महानगरीय प्रदेश, नदी घाटियां, delta, तटीय
Extensive → घास के मैदान
Sporadic ⇒ पठारी प्रदेश।
Non Ecumene → मरुभूमि, दलदल भूमि, उच्च पर्वतीय क्षेत्र

<u>अक्षांशीय आधार पर</u> :-

0 - 10°N - 10%
10 - 20°N - 20%
20 - 40°N - 50%
40 - 60°N - 10%
60 - 75°N - 1%

<u>दक्षिणी गोलार्द्ध</u> :- 9%

ऊँचाई के आधार पर

900 m से ऊपर - 10%
600 m से ऊपर - 50% (40+10)
300 m से ऊपर - 75% (50+25)
Base से ऊपर - 100%

Laurence curve के द्वारा वितरण

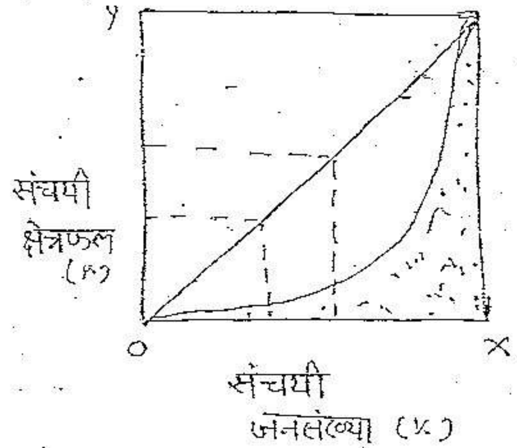

UN के अनुसार : 3 भागों में बाँटा

अतिसघन - i) प्राथमिक सघनता - 300 से अधिक
ii) द्वितीयक सघनता - 200-~~250~~ व्यक्ति/km²
iii) तृतीयक सघनता - 100 व्यक्ति/km²

प्राथमिक सघनता - Bengal delta, Ganga plain, SE china, BENELUX

द्वितीयक सघनता

सघन :- 25 - 100 व्यक्ति /km^2

विरल :- 25 व्यक्ति /km^2 से कम

भारत में जनसंख्या वृद्धि एवं वितरण

अवस्था I - High Stationary Phase :- 1872 में प्रथम जनगणना परन्तु असफल | 1881 में सफल रही | अतः भारत के demographic इतिहास का प्रारंभ है | यह चरण 1881 से 1921 तक का है | भारत की कुल जनसंख्या 1881 में 22 crore , 1911 में 23.6 , 1921 में घटकर 23.1 crore हो गयी अर्थात् 1911 - 21 के मध्य जनसंख्या वृद्धि दर - 0.3% प्राप्त हुई जिसका मुख्य कारण I ww, महामारी , दुर्भिक्ष , आकार आदि था अतः 1921 को भारत का Great demographic divide माना जाता है क्योंकि इसके पश्चात भारत में कभी भी जनसंख्या पतन नहीं हुआ |

अवस्था II :- 1921 - 1951 - Early expanding Phase :- 1951 में कुल जनसंख्या 33 crore प्राप्त हुई जो पाकिस्तान के विभाजन एवं सांप्रदायिक दंगों के बावजूद प्राप्त हुई क्योंकि कुपोषण महामारी पर नियंत्रण , दुर्भिक्ष , अकाल पर नियंत्रण , imported medicine की उपलब्धता।

अवस्था III : जनसंख्या विस्फोटक काल (1951 - 81)

कुल जनसंख्या 30 वर्षों में double हो गई | 1961-71 में भारत की अधिकतम दशकीय वृद्धि दर 24.9 प्राप्त हुआ | Uttar Pradesh में

1971-81 में पुनः जनसंख्या विस्फोट हुए। कुल वृद्धि दर 24.6 कायम रही क्योंकि अन्न संकट समाप्त, हरित क्रांति: आत्मनिर्भरता, ग्रामीण एवं Tribal क्षेत्रों में दवा, चिकित्सा सुविधा उपलब्ध हुई। BR – 45 व्यक्ति/1000 से ऊपर, DR घटकर २० से कम हो गया।

<u>अवस्था IV · 1981 - वर्तमान</u> :- जनसंख्या वृद्धि दर का पतन, 1991 में जनसंख्या 82 crore, वृद्धि दर – 21.4%.

2001 - जनसंख्या वृद्धि दर - 19.6%
कुल जनसंख्या - 1 Billion से अधिक

२011 कुल जनसंख्या - 1.21 Billion
वृद्धि दर - 17.6

भारत में वृद्धि दर का निरंतर ह्रास जारी है परन्तु कुल जनसंख्या 2070 में स्थिर होगी जो पहले 2045 में निर्धारित की गई थी।

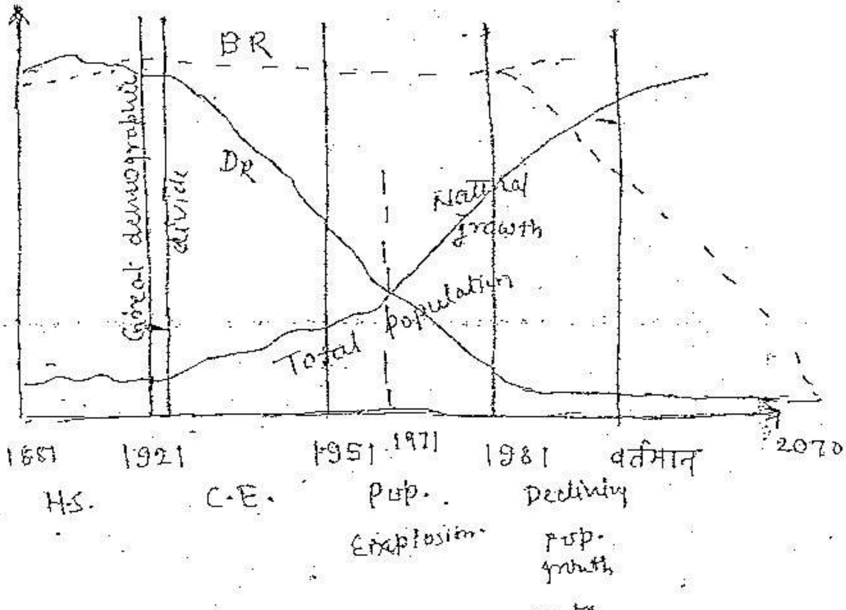

बितरण:-

i) अतिसघन (उच्च) :- जहाँ 750 व्यक्ति / km² से अधिक हो

Ex- Bihar, Bengal, Kerala, TN, UP.

History of settlement, High land capability गरीबी, अशिक्षा,

ii) उच्च सघनता :- 500 से 750

iii) Moderately High :- 250 से 500

iv) Low :- 100 - 250

Ex- MP, Jharkhand, Orissa, CG etc.

v) Very low :- less than 100

Ex- Sikkim, Arunachal Pradesh. etc

प्रवसन

प्रवसन से तात्पर्य मानव अथवा मानव समूह से किसी स्रोत से गंतव्य की ओर स्थाई एवं अर्द्धस्थाई रूप से विस्थापन जहां पुराने सांस्कृतिक संलग्नता टूटती है एवं नये संस्कृतियों में विलय होता है अर्थात प्रवसन के 3 तत्त्व हैं।

a) Distance
b) Intension
c) New cultural Affiliations.

प्रवसन पर Ravenstein का Theory :- Ravenstein के नियम के अनुसार प्रवसन मुख्यतः आर्थिक कारकों से प्रेरित होते हैं एवं लंबी दूरी के प्रवसन पुरुष विशिष्ट एवं कम दूरी के migration female विशिष्ट होता है। प्रत्येक बाह्य प्रवसन का प्रभाव प्रतिप्रवसन भी होता है।

प्रवसन में distance decay law लागू होता है अर्थात migration का आयतन का दूरी के साथ व्युत्क्रमानुपाती संबंध है। कुशल श्रमिकों का migration अधिक दूरी का परन्तु कम संख्या का migration होता है।

LEE का Model :- Lee ने Migration के Push Pull model को प्रतिपादित किया है।

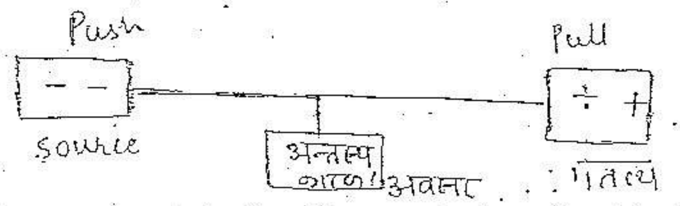

Push :- प्रवसन के स्रोत पर कार्य करती है

Pull - गन्तव्य पर कार्य करती है।

Push Factor :- आर्थिक - Low PCI, low wage rate
जननांकीय - BR, DR.
प्राकृतिक व पर्यावरणीय
सामाजिक
धार्मिक
राजनैतिक

जननांकीय - उच्च जन्म दर, जनसंख्या विस्फोटक वृद्धि अधिक घनत्व

प्राकृतिक व पर्यावरणीय :- प्राकृतिक आपदा - बाढ़, सूखा, भूकंप etc.

सामाजिक :- विवाह, गरीबी, बेरोजगारी, महामारी, भेदभाव, जाति भेद, साम्प्रदायिक हिंसा, सामाजिक प्रदूषण

धार्मिक - सामुदायिक भावना, असुरक्षा

राजनैतिक - Migration Policy, China ने Tibbat के लिए policy, Russia का Siberia के लिए Policy

गन्तव्य: उच्च श्रम दर
रोजगार के अवसर
बेहतर जीवन स्तर
चिकित्सा सुविधा
स्वास्थ्य सुविधा
मनोरंजन,
आर्थिक उन्नति
सामाजिक सुरक्षा
सामाजिक कुरीतियाँ

20/09/2012 (12)

Evening

International Migration :-

Phase - 1 :- प्राचीन काल :- प्राचीन काल में मगध से दक्षिण एशिया की ओर प्रवसन हुआ है।

→ महेन्द्रबर्मन - अंगकोरवाट का मंदिर (कम्बोडिया)

→ मध्य एशिया के देशों के राजा अपने आप को मगध का वंशज बतलाते हैं।

→ श्रीलंका के सिंघली → magadh का वंशज / प्रवसन

चोल का प्रवसन :- TN, A.P से मलेशिया, इण्डोनेशिया, श्रीलंका में प्रवसन
↳ हिन्दू राजा

II दास प्रवसन (Slave ~~Migration~~) (1618 - 1833)

अफ्रीका के अश्वेतो का दक्षिण अमेरिका, उत्तरी अमेरिका कैरेबियन की ओर migration.

→ कृषि कार्य हेतु मजदूर एवं श्रम का प्रवसन

Phase III - 1833 - 1925 :- यह migration ~~endang~~ : Indentured labour (बंधुआ मजदूर) migration कहलाता है। तथा 1833 में slave act का उन्मूलन किया गया परन्तु बंधुआ मजदूर कानून इससे कुछ पृथक नही था। मुख्य रूप से भारतीयों का प्रवसन हुआ। sugar cane cultivation हेतु हुआ तथा भोजपुरी भाषायी क्षेत्र के लोगों का प्रवसन हुआ जो गन्ना उत्पादन में निपुण थे।

1834 में Mauritius, 1874 - Fiji, 1861 - गायना, 1845 - 75 के बीच कैरेबियन द्वीप क्यूबा, Reunion island, South africa

Phase IV :- 1925-75 :- Brain drain migration कहलाता है। विज्ञान, शिक्षा, Dr. का पलायन। मुख्य रूप से गन्तव्य US, UK. एवं Canada, Australia, NZ में प्रवसन हुआ।

Phase V :- Information Technology migration computer, software, के युग में, California, Canada, Boston में प्रवसन हुआ।

Inter state Migration (अंतरराज्यीय प्रवसन)

Source Region :- Empowered Action group से migration (Bihar, UP, Raj, MP, CG, Orissa, Jharkhand) Kerala से प्रवसन

गन्तव्य :- महाराष्ट्र, असम, WB, पंजाब, दिल्ली एवं अन्य महानगर, TN, की ओर प्रवसित

Primate city का map

मुख्य रूप से migration ① मध्य गंगा के मैदान से पारगंगा के मैदान की ओर
② मध्य गंगा के मैदान से Mumbai Metropolitan.
③ Kerala से International migration है एवं Meteropolis में प्रवसन
④ M.P. से Mumbai में प्रवसन

Types of Migration :-

I Rural to Rural :- लगभग 2/3rd प्रवसन होते हैं अथवा 64% migrants.

कारण - ① विवाह - inter specific migration; female specific
② Labour migration. - Ex - Bihari Labour का पंजाब में migration.
③ राजस्थान से गुजरात की ओर migration

II Rural to Urban :- लगभग 21%, बेहतर आर्थिक जीवन, उच्च wage rate, स्वास्थ्य, चिकित्सा सुविधा, मनोरंजन नगरीय आकर्षण, शिक्षा, व्यापार हेतु

III Urban to Rural :- लगभग 6%. Retirement गाँव के शुद्ध जीवन, आर्थिक मंदी, Job loss.

IV Urban to Urban :- छोटे नगर से बड़े नगरों की ओर लगभग 9%
बेहतर सुख सुविधा, नगरीय आकर्षण, सामाजिक सुरक्षा, आर्थिक लाभ, उच्च शिक्षा, बेहतर चिकित्सा सुविधा हेतु

- Concept of optimum Population
- Over Population
- Under – –

Concept of optimum Population :- Optimum Population नारी सौन्दर्य की तरह है जिसे परिभाषित नही किया जा सकता। इसे कई रूपों में वर्णित किया गया परन्तु सामान्यीकृत नही किया जा सकता है।

Optimum pop. वह है जिसमें मांग एवं आपूर्ति के मध्य संतुलन कायम रहे। वह जनसंख्या जो दिये गये संशोधनो के द्वारा पूर्णतः पोषित है, अनुकूलतम है। वह जनसंख्या जिसे कुपोषण, भुखमरी, महामारी जैसी परिस्थितियाँ प्रभावित नही करती एवं उच्च जीवन स्तर के सभी वस्तु एवं सुविधाये उपलब्ध हो अनुकूलतम जनसंख्या कहलाती है।

वह जनसंख्या जो देश के संसाधनो पर भार नही है बल्कि संसाधनो के दोहन एवं समुचित उपयोग में कार्यरत है अनुकूलतम जनसंख्या कहलाती है।

वह जनसंख्या जो शिक्षित, विज्ञान प्रौद्योगिकी में उन्नत आर्थिक क्रियाओं में संलग्न एवं GDP में योगदान करती है उस देश में अनुकूलतम जनसंख्या मानी जाती है।

वह जनसंख्या जहां संसाधन एवं सामाजिक आर्थिक प्रक्रियाये इस प्रकार की हो कि संपूर्ण व्यक्तित्व के विकास के लिए सभी आर्थिक शर्तें लागू होती है।

Ex - USA

Over Population :- O.P. का अर्थ है वह जनसंख्या जो देश के संसाधनों पर भार स्वरूप हो. तथा कुपोषित, अशिक्षित, बेरोजगार, निर्भर तथा संसाधनों के अतिदोहन एवं विनष्टता का कारण हो।

Ex. - Bangladesh, India

O.P. से संबंधित समस्यायें :- ① आर्थिक
② सामाजिक
③ पर्यावरणीय
④ धार्मिक
⑤ राजनैतिक

Under Population :- वह जनसंख्या जो संसाधनों के व्याप्ति से आनुपातिक विश्लेषण में अत्यंत कम हो जिससे संसाधन सुषुप्त रह जाते हैं तथा आर्थिक वृद्धि के लिए यह एक अवरोधक है क्योंकि शिक्षित जनसंख्या मानव संसाधन बनती है तथा मानव संसाधन ही प्राकृतिक संसाधनों को क्रियाशील करता है।

Ex. - Brazil, NZ, Australia, Canada

जनसंख्या समस्या के रूप में :-

⇒ "जनसंख्या स्वयं में कोई समस्या नहीं है, परन्तु किसी अन्य समस्या का समाधान इसके नियंत्रण के बिना संभव नहीं है।"
— Pt. J. L. Nehru

⇒ "गरीबी जनसंख्या को प्रजनन करती है। विकास सर्वश्रेष्ठ निरोधक है।"
Indira Gandhi

⇒ "जनसंख्या समस्या तभी बनती है जब अकुशल एवं अशिक्षित है, शिक्षित एवं कुशल जनसंख्या मानव संसाधन होती है।"

⇒ "जनसंख्या संसाधनों पर बोझ है, यदि अक्रिय एवं सुसुप्त है।"

Ackerman ने जनसंख्या को संसाधन एवं प्रौद्योगिकी के आधार पर विश्लेषित किया है जिसमें यह स्पष्ट होता है कि जनसंख्या प्रतिकूल वही है जो संसाधनों की उपलब्धता से अधिक एवं प्रौद्योगिकी में पिछड़ी हो।

TYPE	Resource	Population	Technology	
US TYPE	High	optimum	High	Non Prob
European Type	Low	High	High	No-Prob.
Brazil	High	Low	Low	Under Pop.
Egyptian Type	Low	High	Low	Over Populatn
Arctic TYPE	Low	Low	Low	No Prob.

विकसित देशों की जनसंख्या समस्या :-

(1) Ageing Population
(2) निर्भरता दर उच्च
(3) श्रम की कमी जिससे श्रम दर उच्च
(4) जनसंख्या में ह्रास / पतन
(5) कृषि क्षेत्र का पतन
(6) सेवा क्षेत्र की व्यापकता
(7) उत्पादन में ह्रास

विकासशील देशों की समस्या :- (1) गरीबी
(2) भुखमरी
(3) अशिक्षा।
(4) स्वास्थ्य सुविधाओं का अभाव

Social capital :- पूँजी 3 प्रकार की होती है :

a) Material capital - Ex - मौद्रिक, सोना, संसाधन

b) Human capital :- Ex. Universities के Pass out विद्यार्थी, Training

c) Social capital :- यह एक समाजशास्त्रीय विवेचना है। इसमें न तो शिक्षा एवं श्रम कुशलता और न ही भौतिक एवं आर्थिक धन का कोई संदर्भ है। सामाजिक पूँजी से तात्पर्य व्यक्ति एवं समूह के जागरूकता, सचेतना, अभिव्यक्ति एवं उनके सामाजिक, आर्थिक राजनैतिक चिंतन से है जो विकास के प्रक्रियाओं को तीव्र करता है। आर्थिक लाभ का वितरण एवं सहयोगात्मक भावना से निर्मित है।

Social capital का अर्थ है social interaction जिसमें व्यक्ति- व्यक्ति को सहयोगात्मक समर्थित भावना से तथा सामाजिक सहभागिता एवं संयोजकता से आर्थिक संपन्नता अथवा प्रगति को उत्प्रेरित करता है।

सर्वप्रथम USA में 1820 के दशक में यह देखा गया कि जिस समाज में व्यक्तियों के मधुर संबंध थे, व्यवहार- विचार के आदान प्रदान थे। सामाजिक- आर्थिक मुद्दों में विमर्श एवं सहभागिता थी वहां आर्थिक प्रगति की प्रक्रियायें तीव्र थी।

Social capital को सर्वप्रथम Hanifan ने परिभाषित किया। इनके अनुसार Social capital सामाजिक संबंधों एवं संयोजकता, सचेतना, जागरूकता तथा अभिव्यक्ति का प्रतीक है जिसके आधार पर आर्थिक प्रगति के मार्ग खुलते हैं।

Robet Putnam ने social capital को व्यक्ति एवं समाज के अंतर्क्रियाओं से उत्पन्न जागरूकता एवं चेतना को कहा है जो राजनैतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक सामाजिक मुद्दों पर दृष्टिकोण के रूप में फलित होता है।

भारत में social capital ग्रामीण प्रदेशों में अधिक है जहां पारस्परिक सहयोग की भावना एवं सामाजिक अंतर्संबंध अधिक सशक्त है. social capital का Ex: self help group, corporative society, social forum (मंच), cultural forum के माध्यम से अभिव्यक्त होते है।

Social well being एवं जीवन की गुणवत्ता के परस्पर निर्भर संबंध है। Social well being की संकल्पना विकसित राष्ट्रों में अनुप्रयुक्त होती है जहाँ आर्थिक प्रगति चरम पर है। Social well being का अर्थ है अच्छी गुणवत्ता युक्त जीवन एवं आर्थिक प्रगति शिक्षा, सामाजिक सुरक्षा के साथ संपोषणीय विकास की प्राप्ति।

Social well being, Economic well being पर आधारित है तथा दोनो में कारण कार्य संबंध है। Social well being के अंतर्गत निम्नांकित प्रतिमान सम्मिलित है

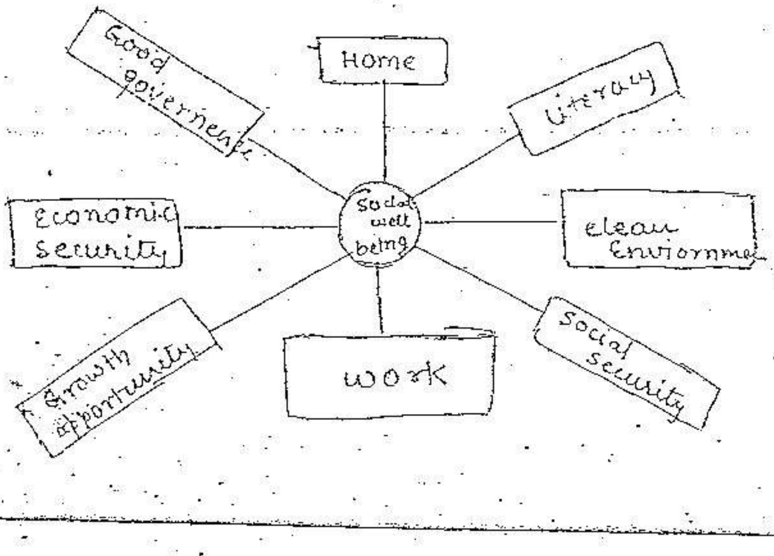

20

20/03/2012
Night

Political Geography

(16)

Paper-1 - Model & Theory

Heartland & Rimland Theory

Heartland Theory by Mackinder :-

भू-राजनीति शब्द के द्वारा सामरिक सहयोग एवं भूस्थानिक अंतर्संबंधों को व्याख्याकृत करते हैं । MAHAN ने सर्वप्रथम भू राजनीति में ऐतिहासिक दृष्टिकोण स्थापित किये जिसमे जल एवं थल शक्तियों के ऐतिहासिक संघर्ष को दर्शाया तथा जल शक्ति को सर्वोपरि माना ।

1904 में Mackinder ने ~~अपने~~ Geographical Pivot of History में Mahan के संकल्पना को व्युत्क्रमित कर दिया तथा थल शक्ति को प्रभुत्व शाली बतलाया जिसमें मंगोलों के इतिहास का आधार है।

Mackinder ने Geo spatial model (भूस्थानिक model) के रूप में हृदयस्थल सिद्धान्त को प्रस्तुत किया जिसमें त्रिस्तरीय भौगोलिक एवं भू राजनीतिक विभाजन किया

(1) Pivot Area :- यह पश्चिम में यूराल, दक्षिण में मध्य एशिया की उच्च भूमि, पूर्व में साइबेरियन पर्वत एवं उत्तर में आर्कटिक क्षेत्र है जहां असीम संपदायें प्राप्त होती है तथा यह थल शक्ति का परिचायक है । यह एक प्राकृतिक दुर्ग है जो अभेद्य, अगम्य एवं बाह्य आक्रमण से सुरक्षित है

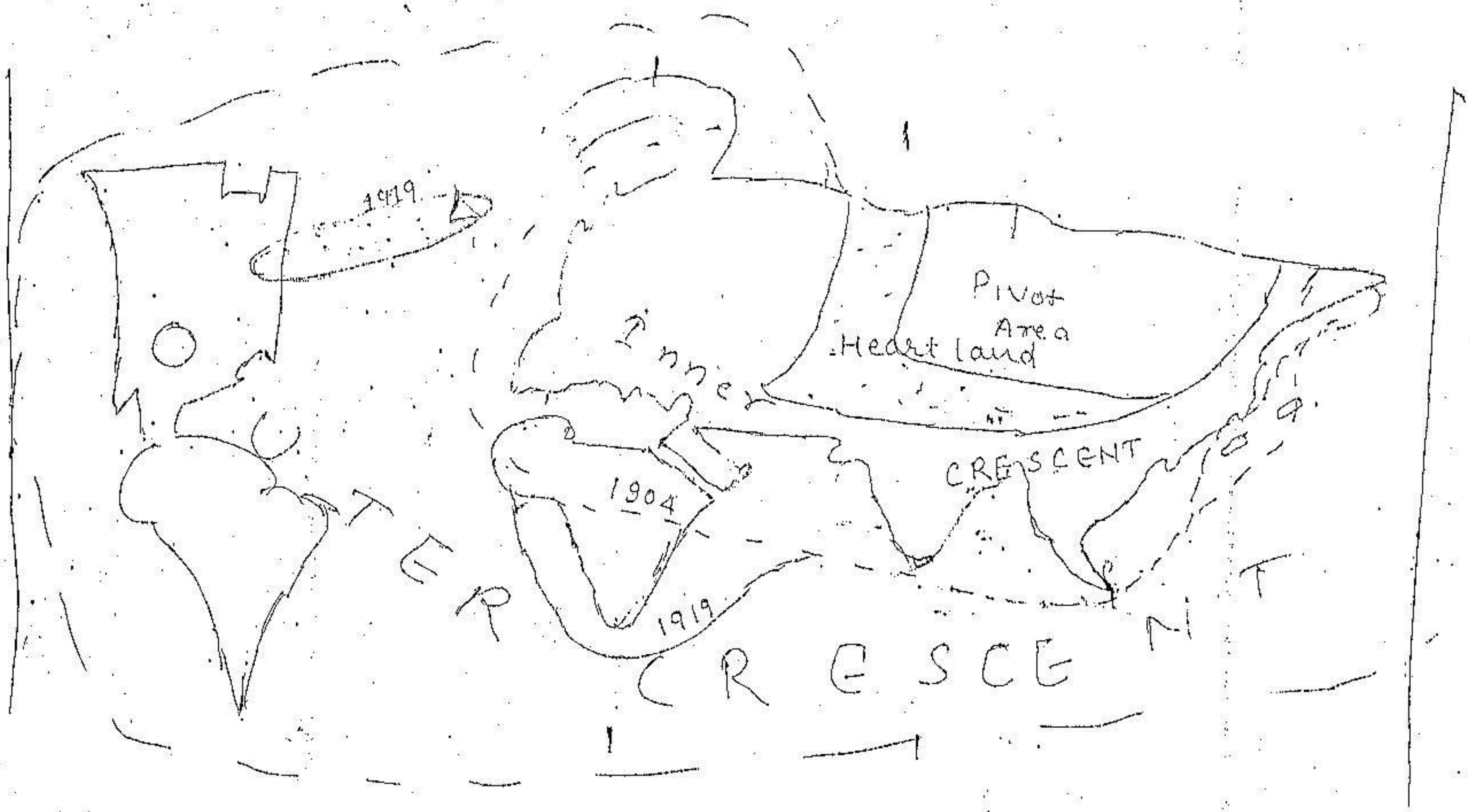

1919
Pivot
Area
Heart land
Inner
CRESCENT
1904
1919
OUTER
CRESCENT

आंतरिक अर्धचन्द्र :- यह तटीय प्रदेश है जो Pivot area के चारों तरफ विस्तृत है एवं यह जल शक्ति का परिचायक है।

Ex- Europe, पूर्वी china, Korea, SW Asia,

सुगम्यता के कारण असुरक्षित है एवं बाह्य आक्रमण से ग्रसित।

बाह्य अर्धचन्द्र :- नई दुनिया के देश सम्मिलित है एवं यह भू राजनीति एवं शक्ति संघर्ष से बाहर अवस्थित है। UK एवं Japan को भी इसी वर्ग में रखा गया।

World Island की परिकल्पना :- Eurasia एवं उत्तरी सहारा को world island माना जहाँ शक्ति संघर्ष का केन्द्र है। 2/3 भूमि पर 3/4 से अधिक जनसंख्या निवास करती है।

1918 में Mackinder ने अपनी नई पुस्तक Democratic ideals & Reality में हृदय स्थल सिद्धान्त को प्रतिपादित किया जिसमें इन्होंने Pivot area को रुपांतरित कर हृदय स्थल घोषित किया। पश्चिम में volga basin, दक्षिण में हिमालय, ईरान, तुर्की के पर्वत को सम्मिलित किया।

Mackinder अपने भू राजनैतिक संकल्पना में 3 कारणों से सशक्त हुए :-

a) 1917 में बोल्शेविक क्रांति एवं रूस में शक्तिशाली केन्द्रीय प्रशासन का उदय

b) प्रथम विश्वयुद्ध में Europe में Germany की पराजय

c) Trans siberian rail way का निर्माण

जिससे Siberia के संसाधन आपस में जुड़ गये / जागृत हुए।

इन्होंने आंतरिक अथवा सीमान्त अर्धचन्द्र को विकसित कर संपूर्ण अफ्रीका को सम्मिलित कर लिया।

Mackinder ने Heart land theory को विकसित करने में नि·लि: अवधारणाओं का प्रयोग किया है।

i) ऐतिहासिक काल से जल एवं थल शक्ति में भू राजनैतिक संघर्ष है।

ii) इतिहास भूगोल के कारको पर निर्मित है। भौगोलिक दशाओं में परिवर्तन, जलवायु में परिवर्तन इतिहास के धड़कनो को उत्पन्न करते है।

iii) थल शक्ति जल शक्ति से श्रेष्ठ है क्योंकि तटीय देश सुगम्य हैं एवं आक्रमणकारी अपने प्रभुत्व को आसानी से स्थापित कर सकते है।

इन्होंने एक प्रसिद्ध भू राजनैतिक कहावत लिखी " Who rules Eastern Europe command the Heart land,
Who rules Heart land, commands the World Island,
Who rules World Island command's the World."

1944 में Mackinder ने H.L.T को पुनः संशोधित किया क्योंकि US का Super power के रूप मे उदय हो चुका था। इन्होंने द्विध्रुवीय विश्व, शक्ति केन्द्रीयता को mid land basin संकल्पना के रूप में प्रस्तुत किया। विश्व में 2 शक्तियो का केन्द्र माना

a) हृदय स्थल b) Mid land basin

यह UK एवं उत्तरपूर्वी US का संयुक्त भाग है। Atlantic महासागर इनके मध्य अवरोधक नहीं बल्कि सुगम्यता को उत्पन्न करता है। दोनों ही भागों में एक ही प्रजाति धर्म, आर्थिक सामाजिक राजनैतिक चिन्तन के लोग रहते हैं अतः इनके सामरिक अभिरुचियाँ सदृश्य हैं। यह प्रपत्र Foreign Affairs नामक पत्रिका में Roundworld & winning of the peace से प्रकाशित हुआ था। इस प्रकार हृदय स्थल भूशक्ति है जो आने वाले विश्व पर अपने अवस्थिति संसाधन एवं भू-राजनैतिक तथा सामरिक संबंधों के कारण प्रभुत्व स्थापित करेगा।

आलोचना :- HLT महज एक परिकल्पना है जिसे Solina ने सुन्दर शब्दों से रचित महानतम ग्रंथ बतलाया जिसके सार तत्व नगण्य थे। Land एवं sea power में एतिहासिक संघर्ष की संकल्पना अनुचित है क्योंकि Sea power आपस में संघर्षशील रहे हैं।

France - Germany, UK - dutch

ii) भौगोलिक दशायें इतिहास को निर्धारित करती हैं। यह नियतिवादी संकल्पना है। आंशिक सत्य हो सकता है इतिहास पर सामाजिक आर्थिक जीवन के प्रभाव अधिक परिलक्षित होते हैं।

Heartland न तो अभेद्य दुर्ग है न ही प्राकृतिक किला। यह चारों तरफ से सुगम्य है।

iii) यह मॉडल Mercator प्रक्षेप्य पर निर्मित है जिसमें ध्रुव बिन्दु न होकर विषुवत के सामानांतर रेखा हो जाती है जिससे अमेरिका एवं

रूस दूरस्थ दिखते हैं परन्तु वास्तव में एक दूसरे के अति निकटस्थ हैं।

iv) इस model में UK एवं Japan को विश्व द्वीप से बाहर रखा गया। जबकि आधुनिक विश्व की भू राजनीति में इनका महत्वपूर्ण स्थान है।

Rimland Theory - Spykman ने 1943-44 में इनके मरणोपरांत प्रकाशित की गई जो वास्तव में Heartland सिद्धान्त की आलोचना है। इन्होंने त्रिस्तरीय तंत्र को स्वीकृत किया है तथा Inner crescent को Rimland माना है यह Rimland समुद्री शक्ति का परिचायक है इसकी प्रशंसा में लिखा कि तटीय संलग्नता भौगोलिक-लाभ है सुगम्यता, विश्व व्यापार एवं आर्थिक शक्ति के उदय में सहयोगी होता है। Rimland पर विश्व की 2/3 rd जनसंख्या निवास करती है तथा यहां सभी संसाधन उपलब्ध हैं। पेट्रोलियम लोहा, कोयला etc. ऐतिहासिक काल में भी Rimland के देश प्रभुत्वशाली रहे।

जबकि Heartland एक दुर्गम्य जलवायविक जटिलताओं एवं कठिन भूदृश्य से युक्त दुखांतक क्षेत्र है (Agony) जहाँ संसाधन सुसुप्त एवं सर्वाधिक महत्वपूर्ण संसाधन मानव संसाधन भी अनुपस्थित है।

Trans-siberian Railway 7 दिन में यात्रा पूरी करता है। जो किसी भी प्रकार की सामरिक सुरक्षा एवं आर्थिक संबद्धता को नहीं जोड़ सकता।

यह सामरिक रूप से सर्वाधिक विलगित प्रदेश है जो वैश्विक भू राजनीति में भागीदारिता भी नहीं निभा सकता। इस प्रकार

Rimland, Heartland से भूसामरिक दृष्टिकोण से अधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि अवस्थिति संसाधन, समुद्री शक्ति मानव संकेन्द्रण, विश्व व्यापार का केन्द्र है

Who controls Rimland, Rules the ~~world Island~~ Eurasia

Who rules the ~~world Island~~ Eurasia controls the distinies of the world.

Heartland की व्यवहारिकता :-

i) Pre cold war :- क्रांति एवं रूस की शक्ति का उदय

b) USSR का गठन Heartland का शक्ति केन्द्र बनना है।

c) Transsiberian Rail से आर्थिक शक्ति के रूप में उदय क्योंकि Kuzbas - Ural Link स्थापित हुआ। (coal, Fe)

d) II[nd] ww में जर्मनी की पराजय

e) जर्मनी का baltic corridor से प्रवेश करना एवं रूस के हाथों पराजय।

ii) Cold war Period :- ① Cuban missile crisis :- USSR ने क्यूबा पर अमेरिकी दबाव के विरोध में Nuclear missile को भेजा। इस प्रकार रूस ने शक्ति संतुलन स्थापित किया।

② 1971 Indo-Pak war :- USA के 7वें बेड़े के जवाब में (Nuclear जहाज) रूस ने भारत के साथ परमाण्विक संधि की तथा जवाबी हमले का भय उत्पन्न किया।

③ वियतनाम युद्ध :- USSR की सेना ने वियतनाम को समर्थन किया तथा USA हारकर भागा।

वर्तमान प्रसंग :- ① 1990 में USSR का विखण्डन तथा आर्थिक शक्ति के रूप में पतन परन्तु सामरिक शक्ति के रूप में आज भी विद्यमान है।

ii) SCO की स्थापना, Heartland के पुनर्उदय का प्रयास है।

iii) CIS एक वैश्विक आर्थिक भूराजनैतिक शक्ति है जिसे नकारा नहीं जा सकता।

iv) रूस का Arctic सागर विवाद में प्रभावी / वर्चस्व

ये model वर्तमान में अप्रासंगिक हो चुके हैं क्योंकि अब संपूर्ण विश्व वैश्विक ग्राम बन चुका है तथा युद्ध संघर्ष का अंत हो चुका है।

पुनः Nuclear Power एवं Air power के काल में Land power एवं Sea power की संकल्पना क्षीण पड़ती है।

Boundaries एवं Frontier (सीमा एवं सीमान्त):-

सीमा	सीमान्त
① सीमा रेखीय होती है।	① ये क्षेत्रफलीय होती है।
② आधुनिक संकल्पना है।	② ऐतिहासिक संकल्पना है क्योंकि सभी सीमांत क्षेत्रों का सीमांकन हो चुका
③ Boundary राजनैतिक होते है।	③ ये भू प्रादेशिक होते है
④ सीमा पड़ोसियो के साथ contract के आधार पर निर्धारित की जाती है।	④ सीमान्त प्राकृतिक होती है।
⑤ सीमा centripetal force का परिचायक है	⑤ ये अपकेन्द्रीय शक्तियों का परिचायक है।
⑥ सीमा अंतर्मुखी है तथा प्रवाहों को केन्द्र की ओर उन्मुख करती है।	⑥ सीमान्त बहिर्मुखी है क्योंकि प्रवाह बाहर की ओर कायम होते है तथा राजनैतिक सांस्कृतिक प्रदेशो का विस्तार संभव है।

(7) ये नियत होता है।

(8) भूदृश्य के पूर्ण विकास होने पर तथा राजनैतिक सत्ता संप्रभुता के स्थापित होने पर सीमा निर्धारित होती है।

(7) ये परिवर्तनशील होता है तथा विस्तार परक है।

(8) सांस्कृतिक भूदृश्य का पूर्ण विकास नही होता।

सीमा एवं सीमांत से संबंधित सिद्धान्त :-

I. Core - Periphery Model - Friedman

इसके अनुसार सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं आर्थिक शक्तियाँ केन्द्र की ओर उन्मुख होती है जिससे परिधीय क्षेत्र विरल हो जाते है। अतः परिघटनाओं के बाह्य वलय की ओर सीमान्त क्षेत्र होते है जो संक्रमण क्षेत्र होते है। सभी राजनैतिक संप्रभु शक्तियों का उदय इन्ही केन्द्रो पर होता है।

II जैविक सिद्धांत - Hashouffer :- जर्मनी में social Darwinism के पृष्ठभूमि पर इस मत का उदय हुआ। इसके अनुसार State एक जैविक इकाई है जिसे वृद्धि करने का प्राकृतिक अधिकार है। यह सिद्धान्त सीमा को परिवर्तनशील मानती है। तथा सीमा का विकास राजधर्म है।

British imperialist Policy :- इसमें सीमा को नियत माना गया तथा उपनिवेशो को सीमा से बाहर रखा गया तथा उन्हे सिर्फ आर्थिक उपयोग के लिए प्रयोग में लाया जाये।

Contractual Theory :- अनुबंध सिद्धान्त के अनुसार सीमा 2 अथवा अधिक देशों के मध्य का समझौता है। इस के सीमांकन की 3 विधियां हैं।

a) Arbitrary Method (स्वेच्छिक विधि) ex- Libya - Egypt
b) Arbitration (मध्यस्थता) Ex- India - Pak सीमा
c) Mutual Agreement (द्विपक्षीय समझौते) - पूरा Europe

सीमा के प्रकार :

a) Genetic classification - i) पूर्ववर्ती सीमा - यदि भूदृश्य पूर्ण विकसित नहीं है तथा सीमा के लिए कोई विवाद नहीं है तब ज्यामितीय पद्धति से निर्धारित किया जाता है।
Ex - उत्तरी सहारा, US के states

ii) अनुवर्ती - भूदृश्य के पूर्ण विकास के बाद। इस सीमा का निर्धारण सामरिक राजनैतिक एवं Arbitration के द्वारा, पारस्परिक समझौते के द्वारा हो।
Ex- Europe, Indo - Pak

iii) अध्यारोपित सीमा :- यह सीमा एक ही सांस्कृतिक प्रदेश को 2 भागों में बांटती है एवं सीमा के दोनो पार समानतायें होती है।
Ex - कश्मीर में POK

iv) अवशिष्ट सीमा :- यह ऐतिहासिक सीमाये है जो विलुप्त हो चुकी है।
Ex- पूर्वी एवं पाश्चिमी जर्मनी

भौगोलिक आधार पर

a) पर्वतीय सीमा - भारत - china

b) नदीय - रियोग्रान्डी - US एवं Mexico

c) मरुभूमि सीमा - Pakistan, India.

d) दलदली भूमि - Bangladesh India
Berubari sector

e) झील सीमा - U.S - Canada

ज्यामितीय आधार पर

आक्षांशीय सीमा :- 49° - US - Canada

38° - S. Korea & N. Korea

देशान्तरीय सीमा :-

141° - Alaska एवं canada के बीच

100° W - पूर्वी व पश्चिमी अमेरिका

चतुर्भुजीय सीमा - सहारा के देश

चापीय सीमा - सुडान

21/09/2012

Morning -

(22)

K.C. Tiwari
Mishra &
Puri

- Geopolitics of Indian Ocean & South Asia
- Role of India in world Affairs
- Basis of Geographical federalism
- नये राज्यों का उदय
- Cross Border Terrorism
- Regional consciousness.

Geopolitics :- भू राजनीति शब्द Geo-politics से व्युत्पन्न है। इसके जनक Kjellen ने है। इन्होने इस शब्द का प्रयोग सामरिक समझौते एवं गठबंधनो के लिए प्रयुक्त किया है परन्तु भूराजनीति का अर्थ समकालीन विश्व में परिवर्तित हुआ।

वर्तमान राजनैतिक व्याख्यानों में भू राजनीति का अर्थ है संसाधन एवं अवस्थिति आधारित रणनीतियाँ जो अन्य देशों के विदेश नीति को प्रभावित करने के लिए कार्य करती है।

भूराजनीति के अंतर्गत विश्व व्यापार सैन्य गठबंधन, राजनैतिक संबंध एवं समझौते सम्मिलित होते है। तथा भू राजनीति, राजनीतिशास्त्र से पृथक अवधारणा है जिसमें Political organisation of Space को राजनीति शास्त्र का एवं spatial organisati-on of Politics को भू राजनीति कहा जाता है।

हिन्द महासागर एक आंशिक रूप से बंद सागर है जिसमें 36 तटीय एवं 11 उपतटीय देश सम्मिलित है। विश्व द्वीप में इसकी केन्द्रीय अवस्थिति है।

56 lakh km^2 कुल क्षेत्रफल है जिसमें 18 lakh km^2 दक्षिणी हिन्द महासागर एवं 38 lakh km^2 उत्तरी हिन्द महासागर है।

19.47°E एवं 111°E देशांतरों के मध्य अवस्थित है। 25°N एवं 55°S के मध्य अवस्थित है एवं cape town तथा cape Leuween को जोड़ने वाली रेखा इसे उत्तरी एवं दक्षिणी हिन्द महासागर में विभाजित करती है।

एकमात्र महासागर जिसका नामकरण किसी राष्ट्र के नाम पर प्राप्त होता है। यह भारत के प्राचीन महिमा को दर्शाता है।

हिन्द महासागर में भू-राजनीति मुख्य रूप से जलाधन एवं व्यापार मार्ग पर आधारित है। हालांकि इस विषय में अनेक अभिमत है

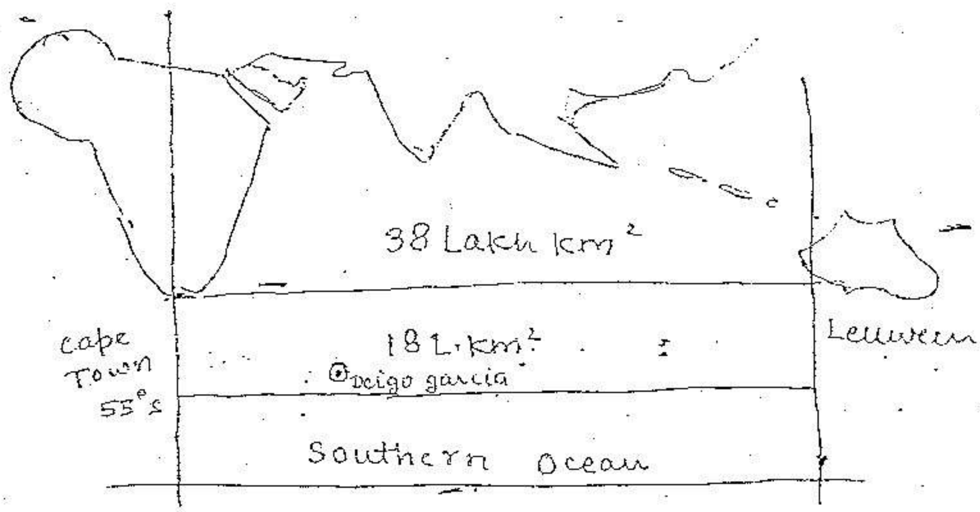

IInd ww के पूर्व Hind महासागर को sea of Tranquil कहा जाता था क्योंकि यहाँ कोई सामरिक एवं सैन्य संघर्ष कायम नहीं थे इसे British lake भी कहा जाता था क्योंकि Britain के पूर्ण नियंत्रण में था।

UK को हिन्द महासागर की रानी कहा जाता था। क्योंकि ब्रिटेन नियंत्रण हिन्द महासागर के सभी व्यापार मार्गों पर कायम था।

- शीत युद्ध काल में ब्रिटेन ने US के Junior partnership को स्वीकृत किया तथा विश्व में २ शक्ति केन्द्र उभर कर आये।

Power Vaccum Theory :- ब्रिटेन ने 1973 में स्वेज नहर से नियंत्रण हटाया तथा मिस्त्र को नियंत्रण सौंपा गया। ब्रिटेन को नियंत्रण सौंपने से deptt. of foreign affair ने ६ शक्ति निर्वात सिद्धांत को जन्म दिया जिसमें कहा गया कि USSR एक inferior शक्ति है जो ब्रिटेन के वापस हटने से उत्पन्न शक्ति निर्वात को संतुलित करने में असक्षम है अतः विश्व व्यापार को सुचारु रूप से कार्य करने के लिए US का हस्तक्षेप आवश्यक है क्योंकि शक्ति संतुलन स्थापित करना आवश्यक है।

Diego Garcia पर US ने सैन्य केन्द्र बनाये Anti ballastic missile को लगाया जो US से 8,000 km की दूरी पर अवस्थित दक्षिणी हिन्द महासागर में अवस्थित एक द्वीप है।

Domino Hypothesis :- इसका अर्थ है USSR साम्यवादी भू-राजनैतिक विस्तार के लिए अग्रसर है। तथा वह साम्यवाद से पूर्वी यूरोप पश्चिम एशिया, China, Korea, SE Asia, यूगोस्लोवाकिया में अपने प्रभुत्व को विस्तृत करना चाहता है। इसके लिए अमेरिकी हस्तक्षेप की आवश्यकता है तथा हिन्द महासागर में एवं तटीय देशों में अमेरिकी राजनीति का प्रभाव विस्तृत करना होगा जिससे साम्यवाद का मुकाबला कर सके।

US ने S. Arabia, Oman, Israel, Pakistan जैसे राष्ट्रो से सामरिक समझौते किये जिसके चलते रूस ने इराक में बगदाद पर, यमन, सुघोत्रा पर अपने सैन्य ठिकाने बनाये।

China दार-ए-सलाम (तंजानिया) पर अपने ठिकाने बनाये, France ने Reunion द्वीप पर। इस प्रकार हिन्द महासागर पर सभी महाशक्तियों की उपस्थिति दर्ज हो गयी जिससे शांत जल उबलने लगा।

Resource Theory :- इसके प्रतिपादक Rocco Paone है। इन्होंने हिन्द महासागर के भू राजनीति को इसके विशाल संसाधन से जोड़कर देखा है। अफ्रीका में खनिज एवं वन संसाधन की प्रचुरता है एवं पश्चिम एशिया में विश्व का 3/4th Petroleum, भारत में मानव संसाधन एवं SE Asia में कृषि, खनिज एवं वन संसाधनों की प्रचुरता है अतः संसाधन एवं कच्चे माल के व्यापार पर नियंत्रण हेतु वैश्विक भू-राजनीति हिन्द महासागर की ओर प्रेरित हुई है।

String of Pearls- Deptt. of foreign affairs, US ने china के सैन्य एवं सामरिक शक्ति के हिन्द महासागर में विस्तार की योजना को string of Pearls कहा

Ex- म्यांमार, श्रीलंका, तस्मानिया, चैगोस, पाकिस्तान में सैन्य उपस्थिति भारत को घेरने की है तथा हिन्द महासागर पर अपने दबदबे को कायम करने की है।

K.M. पाणिक्कर ने 1970 के दशक में कहा था - "Who Rules Indian Ocean will have India at its Mercy."

भारत हिन्द महासागर का केन्द्र है इसकी तटीय सीमा 7515 km तक फैली है। 600 से अधिक द्वीप व्याप्त है तथा 2000 km का उपमहाद्वीपीय प्रक्षेप उत्तरी हिन्द महासागर में प्रविष्ट है। अतः भारत का हिन्द महासागर की भू राजनीति में सर्वोपरि स्थान है जो इसके भौगोलिक अवस्थिति से उत्पन्न होती है।

भारत हिन्द महासागर की भूराजनीति एवं दक्षिण एशिया का महत्वपूर्ण राष्ट्र है जो न केवल भौतिक संसाधन बल्कि मानव संसाधन, विज्ञान प्रौद्योगिकी, R&D में श्रेष्ठ है।

1 भारत - एक सैन्य शक्ति के रूप मे:-

(1) 1971 - बांग्लादेश की स्वतंत्रता।

(2) मालदीव में अब्दुल गयूम की सरकार का मिलिट्री force के द्वारा पुर्नस्थापन

(3) Srilanka में Peace keeping force.

(4) अफ्रीका के देशो में UN Peace keeping force

(5) Sea piracy के विरुद्ध संघर्ष

II भारत - एक नाभिकीय शक्ति के रूप मे - जो शक्ति संतुलन को कायम करता है। भारत Anti balastic missile जो South Asia, SW Asia, SE Asia के विशाल क्षेत्र को नियंत्रित कर सकता है।

III Biotechnology का जनक है तथा S. Asia, SE Asia, पूर्वी Europe में हरित क्रांति का अग्रेरक हो सकता है।

IV Nanotechnology में अग्रणी देश

V Space Technology

VI Medical Science

VII IT Industry

VIII विश्व की सबसे बड़ा प्रजातंत्र एवं धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र

IX विश्व शांति का दूत

X NAM का मार्गदर्शक

XI SAARC में एकपक्षीय सहायता

XII Miliatry Protection - भूटान, नेपाल, मालदीव

Gujral Doctrine :- इन्होंने South Asian देशो के लिए बिना शर्त एक पक्षीय आर्थिक मदद, Trade consation etc.

Look East Policy :- SE देशों से व्यापारिक संबंध में वृद्धि एवं सामरिक समझौते

Look west Policy :- west Asia के देशों के साथ

XVI Yoga
XVII आयुर्वेद
XVIII गांधीवाद

भौगोलिक संघवाद का आधार :

राजनैतिक संघवाद के नि. लि. शर्त होते हैं।

① संविधान की सर्वोच्चता
② लिखित एवं Rigid संविधान
③ शक्ति का पृथक्करण
④ शक्ति का विभाजन
⑤ स्वतंत्र न्यायपालिका

संवैधानिक रूप से भारत एक संघ नहीं है बल्कि Union of State है। आस्टिन जैसे विद्वानों ने इसे Quasi federal कहा परन्तु भौगोलिक संघवाद का भारत श्रेष्ठतम उदाहरण है।

संघवाद भौगोलिक कारकों का सर्वाधिक अभिव्यक्त उत्पाद्य होता है। भौगोलिक संघवाद में Living ston ने २ शक्तियों को वर्णित किया है :

① Centripetal force
② centrifugal force

यदि $cp > cf$ तब एकात्मक तंत्र होता है।

If $cp < cf$ तब परिसंघ (confederation) होते हैं।

If $cp = cf$ तब भौगोलिक संघवाद होता है।

अर्थात् प्रदेश इकाइयों का केन्द्र इकाइयों के साथ सह अस्तित्व, सहभागिता, सामंजस्य, संघवाद का परिचायक है कि न कि subordination, dilution of identities

भारत में भौगोलिक संघवाद

	Cp	Cf
1>	भारत की उपमहाद्वीपीय भौतिक संरचना जो ऐतिहासिक रूप से अन्य संस्कृतियों का अवरोधक रहा तथा भारत वर्ष का एक मानसिक चित्र उत्पन्न करता है। (अटक से कटक, कश्मीर से कन्याकुमारी)	① उपमहाद्वीप मे कही मरुभूमि, कही पर्वत, कही पठार, कही मैदान, कही तट
2>	मानसून में लयबद्धता है। seasons है अतः कृषि कर्म को एक साथ प्रेरित करता है। मानसून की प्रथम बूंदे केरल की शुष्क भूमि पर गिरकर सुरभि उत्पन्न करती है। वह किसानों के मन में नृत्य एवं संगीत उत्पन्न करती है। मानसून विभिन्न भौतिक प्रदेशों में प्रवेश कर समरूपी प्रभाव उत्पन्न करता है जिससे भारत के लोकनृत्य [illegible] एवं त्यौहार बने है।	2> वर्षा की विविधता, कही 100 cm तो कही 20 cm जिसका प्रभाव कृषि तंत्र, खान पान, उत्पादन पर पडता है।
3>	Hindu culture	3> 6 महान धर्म यहां विविधता को उत्पन्न करते है।
4>	भाषा- संस्कृत क्योंकि यह सभी भाषाओं को enrich करता है।	4> 188 भाषाये एवं 1100 बोलिया, 22 संविधानिक भाषा.

C_P	C_F
5> संविधान	5> केन्द्र-राज्य संबंध
6> Common History	6> Truncated (वितीर्ण) इतिहास

नये राज्यों का उदय :- फैजल अली समिति ने राज्यों के पुनर्गठन के लिए भाषायी नृजातीयता को आधार बनाया।

नये राज्यों के निर्माण हेतु निम्नांकित प्रतिमान स्थापित है -

1) भू भौतिक पृथकत्व एवं विलक्षणता
2) संसाधन के आधार
3) भाषायी नृजातीयता
4) जनजातीय नृजातीयता
5) आर्थिक पिछड़ापन.
6) Regional consciousness & History of demand

नये राज्यों के निर्माण में निम्नांकित शर्तें प्रयुक्त होनी चाहिए.

i) Financial Viability
ii) Ecological Viability
iii) Political Viability
iv) Administrative Viability

2000 में 3 नये राज्यो का गठन हुआ-

a) झारखण्ड
b) उत्तराखण्ड
c) छत्तीसगढ़

नये राज्यों की मांग

① विदर्भ
② तेलंगाना → Fin. Via ×, Lang Via ✗
③ बोडोलैण्ड
④ बुंदेलखण्ड
⑤ पूर्वांचल
⑥ मरुप्रदेश
⑦ हरित प्रदेश

Cross Border Terrorism :- आतंकवाद सिर्फ एक कायरतापूर्ण कृत्य है जिसका कोई उद्देश्य नही होता और न ही कोई राजनैतिक व धार्मिक आधार अथवा चिंतन।

इसका उद्देश्य सामान्य जीवन को अस्त व्यस्त करना तथा मानव मन में भय उत्पन्न करना है। अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद ही cross - border Terrorism है जिसकी जड़ें एवं स्पर्शक किसी राष्ट्र में निहित न होकर अनेक राष्ट्रो, संस्थानों में होता है तथा यह अमानवीय सोच से प्रेरित दुष्कर्म है जिसे वित्तीय सहायता, बौद्धिक समर्थन, राजनैतिक सहयोग, सैन्य सहायता, खुफिया सहायता प्राप्त होती है। इसके संजाल असफल राज्यों में होता है जहाँ यह आसानी से घर बना लेता है।

Ex- Afghanistan, Pakistan. etc.

आतंकवाद का प्रारंभ Irish republican army से माना जा सकता है एवं यह PLF (PLF) में भी परिलक्षित हुआ। वर्तमान में अल- कायदा एक प्रमुख आतंकवादी संगठन है।

फिलिस्तीन liberation Front

CBT के कई रूप होते हैं

a) - राजनैतिक आतंकवाद
b) आर्थिक आतंकवाद - Fake currency, Hawala, Black Money, Drugs, Narcotics.
c) Ecological / Enviornmental Terrorism :- जंगल में आग लगाने की घटना।
d) Biological Terrorism :-

आतंकवाद एवं भू आकृति का प्रभाव :-

अगम्य भू दृश्य, पर्वतीय प्रदेश, नदी घाटियां, wind gap, भूस्खलन, हिम स्खलन, सघन वन, हिम वर्षा जैसे भौगोलिक कारक सीमा पार आतंकवाद को प्रभावित करते हैं।

Regional Consciousness :-

(+) RC → (÷) Regionalism → (−ve) Sub nationalism

↓ Telangana — Punjabi — ↓ Nationalism

राष्ट्रवाद एक भावना है जो नृजातीय एकत्व एक समान ऐतिहासिक पृष्ठभूमि अथवा समेकित सुरक्षा (common defence) अथवा राजनैतिक चिंतन अथवा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर एक समष्टि रूप में प्रतिनिधित्व करने की चेष्टा अथवा सांस्कृतिक एवं धार्मिक भावना से उत्पन्न अथवा उपार्जित होती है।

क्षेत्रवाद राष्ट्रवाद का विरोधी अथवा प्रतिस्पर्धी नहीं होता बल्कि यह राष्ट्रवाद का समर्थक है। क्योंकि क्षेत्रवाद में क्षेत्रीय जागरूकता होती है जो किसी आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक मुद्दे पर आधारित होती है। इसमें प्रगति की भावना एवं समस्याओं को उजागर करना तथा राष्ट्रीय स्तर पर प्रकाशित करना निहित होता है। क्षेत्रीय जागरूकता पिछड़ेपन, गरीबी आर्थिक शोषण, अशिक्षा के प्रसंग में उत्पन्न होती है जिससे राष्ट्रवाद में निहित समस्याओं का समाधान हो सकता है।

: परन्तु यदि प्रादेशिक जागरुकता राष्ट्रीय हितो के खिलाफ एवं अवैधानिक, गैरसंवैधानिक हो तब यह अपराष्ट्रवाद होकर राष्ट्र विरोधी बन जाता है।
Ex- विदर्भ, तेलंगाना etc की मांग क्षेत्रीय जागरुकता है। जबकि खालिस्तान की मांग राष्ट्र विरोधी है। जो प्रदेशवाद के भूमि पर उत्पन्न हुआ।

R.C. के मुद्दे :- ① नये राज्यों की मांग
② नये भाषाओं के संविधान में पहिचान की मांग
Ex- नेपाली, मैथली
③ विशिष्ट राज्य का दर्जा देने की मांग
④ सीमा विवाद (राज्यो की)
⑤ संसाधन पर विवाद
⑥ जनजातीय प्रदेशों की मांग

भौगोलिक चिंतन
Perspective in Geography

भौगोलिक चिंतन का मूल बिन्दु मानव प्रकृति संबंध है जिसमें प्रकृति का मानव पर प्रभाव एवं मानव का प्रकृति पर प्रभाव विश्लेषित होता है। अतः भौगोलिक चिंतन में द्वैतवाद एवं विभाजन उत्पन्न होते हैं।

साजिद हुसैन
कौशिक
Sudibt adhikari

द्वैतवाद का अर्थ है दो विचारधाराओं की समानांतर स्थितियाँ जिनके लक्ष्य एक है। ये परस्पर विरोधी होते हुए भी एक दूसरे के पूरक होते हैं परन्तु विभाजन में २ विरोधी मत एक दूसरे से पृथकत्व उत्पन्न करते हैं।

भूगोल में द्वैतवाद :-

i) नियतिवाद V/S संभववाद
ii) क्रमबद्ध भूगोल V/S प्रादेशिक भूगोल
iii) सामान्य भूगोल V/S विशिष्ट भूगोल
iv) Nomothetic V/S Idiographic.
v) Historical Geog. V/S Contemporary Geo
vi) Physical Geog V/S Human Geography

मात्रात्मक क्रांति

क्षेत्रीय विभेदन (Areal diff.)

Ancient → अंधयुग → मध्य कालीन → शास्त्रीय → पूर्व आधुनिक → आधुनिक काल → उत्तर आधुनिक काल

Ancient → अंध युग —— मध्यकालीन → शास्त्रीय → पूर्व आधुनिक → आधुनिक → उत्तर आधुनिक

Ancient (1280 – 400 AD)

- Greek:
  - Homer
  - Thales
  - An Axdmander
  - Hecateus
  - Eratosthenes
  - Happerchus
- Rome:
  - Strabo
  - Ptolemy

अंध युग (765)

मध्यकालीन (1650)

- Al - Biruni
- Al - Masudi
- Ibn - Khaddun

शास्त्रीय (1805)

- Verenius
- Kant

पूर्व आधुनिक (1859)

- Humbolt
- Ritter

आधुनिक (1976)

- Darwin, Ratzel, Spencer ↓
- Vidal, Brunhes, Reclus ↓
- Semple, Hutington, Herbartson
- 1955 से 1976 — मात्रात्मक क्रांति
  - D. stamp
  - chorley & Berry
  - Haggit
  - Neil Harvey

उत्तर आधुनिक

↓

- Critical Revolution
- उग्रसुधारवाद
- मानववाद
- उत्तर व्यवहारवाद
- कल्याणवाद

नियतिवाद V/S संभववाद

नियतिवाद का अर्थ है मानव प्रकृति संबंध में प्रकृति की सत्ता को सर्वोपरि मानना जो मानव के संस्कृति, आर्थिक क्रियाकलाप, व्यवहारवाद एवं सामाजिक तत्वों को निर्धारित करता है। यह एक प्रकार का भौतिक प्रकृतिवाद है जो प्राचीन Greek और Roman परंपराओं में स्पष्ट दिखता है।

नियतिवाद की प्राचीनतम धारायें प्रकृतिवाद ही है जिसमें मानव के सभी आर्थिक, सामाजिक व्यवहारिक पक्ष का निर्धारक एवं निर्णायक प्रकृति के तत्व होते हैं। प्राकृतिक दशाओं में आर्थिक एवं सांस्कृतिक मानव के विभिन्न रूप बनाये क्योंकि प्राकृतिक दशाओं में ही अंतर थे।

अरस्तु ने लिखा कि भारतीय प्रभुत्व राजनैतिक रूप से संगठित परन्तु आलसी हैं, यूरोपीय प्रभुत्व इनके विपरीत राजनीतिक रूप से विखण्डित परन्तु चपल है जो कि क्रमशः उष्ण एवं आर्द्र जलवायु तथा शीत जलवायु के प्रभाव है।

भौतिक नियतिवाद की परम्परा मध्य युग में अरब विद्वानों में देखी गयी। Ibn-Khaldun को प्रथम पर्यावरणीय नियतिवादी कहा गया. परन्तु भौतिक नियतिवाद का स्वरूप Kant के शास्त्रीय युग में परिवर्तित हुआ। मानव प्रकृति का महत्वपूर्ण अंग माना गया प्रकृति का दास नहीं।

Humbolt प्रकृति एवं मानव को एक ही पारिस्थितिक तंत्र के रूप में देखते हैं जहाँ दोनों के मध्य अन्योन्याश्रय संबंध है। इसे Zusamenhang Principle कहा गया। जिसका अर्थ है Hanging together

Ritter एवं Darwin को वैज्ञानिक नियतिवादी कहा गया क्योंकि इन्होंने प्रत्यक्ष निरीक्षण के आधार पर एवं वैज्ञानिक अन्वेषण के आधार पर

मानव प्रकृति संबंध को समझने का प्रयास किया।
इसके पश्चात Ratzel ने नवीन नियतिवाद को स्थापित किया जिसका अर्थ है मनुष्य के जीवन शैली तथा आर्थिक क्रियाओं को नियंत्रित करने वाली 2 सत्ता होती है

① भौतिक पर्यावरण
② राज्य

इनकी पुस्तक Anthrogeography Part I में भौतिक नियतिवाद चरम पर है परन्तु Vol. II में ये मानव -वाद एवं संभववाद की नींव रखते हैं अर्थात Ratzel ने ही नियतिवाद एवं संभववाद का, भौतिक भूगोल एवं मानववाद का द्वैतवाद उत्पन्न होता है।

America में Ratzel की शिष्या Semple ने भौतिक नियतिवाद को पर्यावरणवाद के रूप में प्रतिष्ठित किया। यह अत्यंत दृढ़ एवं कठोर नियतिवाद है जिसमें मानव को पृथ्वी के 'धूल का धूल' बतलाया गया। इनके समर्थक Huntington ने climate and civilisation नामक पुस्तक में इतिहास को भूगोल का उत्पाद्य माना है। जलवायु परिवर्तन इतिहास में Pulsation उत्पन्न करती है।

नियतिवाद 1st ww के बाद संभववाद के उदय से एक अंतः धारा के रूप में व्याप्त रहा। मानव के तकनीकी ज्ञान एवं प्रकृति के रहस्योद्घाटन से नियतिवाद ने संभववाद को जन्म दिया।

संभववाद का उदय France में Vidal के निर्देशन में माना जाता है। संभववाद की प्रेरणा Ratzel के Anthropogeography vol. 2 से प्राप्त होती है तथा Ritter के साहित्य में मानववाद व्यापक रूप से प्राप्त होता है।

संभववाद शब्द की रचना Lucian Febvre ने की। संभववाद को परिभाषित करते हुए लिखा कि प्रकृति में सर्वत्र संभावनाये है। यह तो मानव के ऊपर निर्भर करता है कि वह इन संभावनाओं का कैसे उपयोग करे। मानव प्रकृति का दास

नहीं बल्कि स्वतंत्रकर्ता है तथा अपने प्रौद्योगिकी से एवं जीवन स्तर के आधार पर प्रकृति का दोहन करता है। प्रकृति तो उदासीन है अवरोधक नहीं (31)

There are no neccessities but every where possibilities.

अर्थात प्रकृति में नियत कुछ भी नहीं सर्वत्र संभावनायें व्याप्त है।

Brunhes संभववाद के अन्य समर्थक हैं जिन्होंने क्रमबद्ध उपागम के द्वारा मानव भूगोल को विकसित किया।

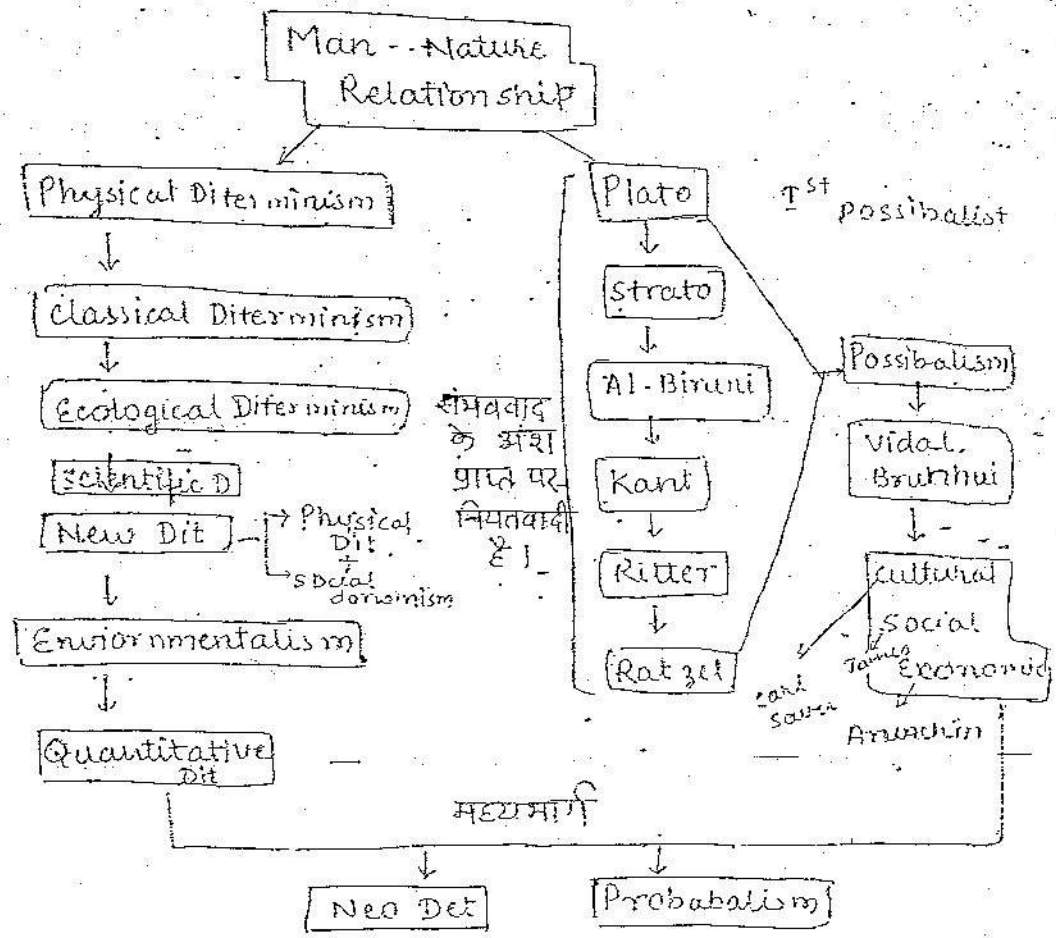

Kant → शास्त्रीय - नियतिवाद
↓
विषयो को अलग-2 किया

आगमनात्मक - प्रत्येक सिद्धान्त को बनाने से पहले उसे प्रत्यक्ष रूप से सिद्ध किया

संभववाद 1920 के दशक के बाद अधिक प्रचलित हुआ Carl sour ने सांस्कृतिक नियतिवाद में सांस्कृतिक पर्यावरण को विशिष्ट महत्त्व दिया एवं संस्कृति के तत्वों को मानव जीवन को प्रभावित करने वाला कारक बताया। James ने इसे सामाजिक नियतिवाद कहा।

Our Thought determines our act. & Our Act determines the previous nature of the Earth. अर्थात मनुष्य के चिंतन से उसकी क्रियाएँ निर्धारित होती है एवं क्रियाओं से प्रकृति का स्वरूप।

Anuchine ने आर्थिक नियतिवाद में मनुष्य के निर्णय लेने की क्षमता को आर्थिक क्रियाओं से प्रभावित माना है जो प्रकृति मानव संबंध को निर्धारित करती है।

संभववाद वर्तमान में मानववाद एवं कल्याण वाद के रूप में फलित है।

नवनियतिवाद :- नव नियति वाद के जनक Griffith Taylor है जिन्होने Australia के प्राकृतिक दशाओं के अध्ययन के आधार पर यह सिद्धान्त प्रतिपादित किया।

इसे stop & go determination भी कहते है। यह दृढ नियतिवाद एवं संभववाद का मध्यम मार्ग है जिसमें प्रकृति को सर्वादेशायी अथवा निर्देशक न मानकर पथ प्रदर्शक माना गया है जबकि मानव को दास न मानकर अनुसरणकर्ता माना है। मानव प्रकृति के शाश्वत नियमों को परिवर्तित नहीं कर सकता। ये नियम सनातन है तथा ये नियम प्रत्येक काल एवं स्थान पर लागू होते है। मानव प्रकृति के प्रवाह को कुछ समय के लिए रोककर उसका उपयोग कर सकता है। इसी प्रकार जैसे यातायात नियंत्रक, यातायात के प्रवाह को कुछ समय के लिए रोक सकता है परन्तु यातायात अपने ही दिशा एवं मार्ग पर संचरित होती है। मनुष्य नदी के मार्ग में जलाशय निर्माण कर विद्युत उत्पादन कर सकता है परन्तु नदी के मार्ग को समुद्र से [illegible] नहीं मोड़ सकता। अतः प्रकृति मानव संबंध में प्रकृति के निर्देशित नियमों के आधार पर ही मानव प्रगति करता है। विरुद्ध होने पर आपदा एवं संकट के रूप में प्रकट होता है।

संभाव्यवाद :- Spate ने 1965 में सम्भाव्यवाद चिंतन प्रतिपादित किये जिसमें प्रकृति मानव संबंध में नियतिवाद एवं संभववाद का मध्यम मार्ग है तथा दोनों के मध्य सामंजस्यता स्थापित की गई है।

Enviornment without Men is a Meaningless Phrase.

अर्थात् पर्यावरण बिना मानव के अर्थहीन है परन्तु मानव प्रकृति के प्रत्येक अंश से संभावना प्राप्त नही कर सकता अर्थात् प्रकृति सर्वत्र संभावना से युक्त नही है बल्कि संभाव्यता है।

प्रकृति में संभाव्यता का अर्थ है मनुष्य के वांछित क्रियायें फल प्राप्ति तक जा सकती है अथवा नही भी जा सकती।

भूगोल में अन्य द्वैतवाद

II भौतिक भूगोल v/s मानव भूगोल :- इस द्वैतवाद का उदय के चिंतन में है जिसने भूगोल के मुख्य विषय निर्धारित करने में इस द्वैतवाद को जन्म दिया। ~~यदि~~ चूँकि ये स्वयं नियतिवादी है अतः भौतिक भूगोल पर अधिक बल देते है। ~~प्र~~ प्राचीन ग्रीक Plato एवं Strato को छोड़कर शेष सभी भौतिक भूगोल के समर्थक है। Classical युग मे Kant एवं Humbolt ने दोनो पर बराबर बल दिया है जबकि Ritter मानववादी है।

संभववाद के समर्थक सभी मानववादी विषयों के चिंतक बने दूसरी ओर नियतिवाद के समर्थक भौतिक भूगोल के चिंतक रहे।

यह द्वैतवाद Ratzel के चिंतन में सर्वोत्कृष्ट रूप से उभर कर सामने आया है।

Anthropogeography I में Physical तथा vol 2 में मानववादी भूगोल की अवधारणा है।

वास्तव में भौतिक भूगोल एवं मानव भूगोल एक दूसरे विरोधाभासी नहीं है बल्कि पूरक है। मानव के बिना प्रकृति अर्थहीन है तथा मानव प्रकृति से शामिल है। 1950 से 76 तक मात्रात्मक क्रांति में यह द्वैतवाद पुनः उभर के आया परन्तु 1976 के पश्चात मानववाद की प्रधानता स्थापित हो चुकी है

III सामान्य भूगोल / Nomothetic / क्रमबद्ध भूगोल v/s विशिष्ट / प्रादेशिक / Ideographic / क्षेत्रीय विभेद

इस द्वैतवाद के जनक वेरेनियस है जिन्होंने सामान्य एवं विशिष्ट भूगोल की रचना की सामान्य भूगोल ही ~~प्रत्यक्ष~~ क्रमबद्ध भूगोल है। ~~क्रमबद्ध~~ प्रत्यक्षवाद पर आधारित क्रमबद्ध भूगोल Nomothetic कहलाता है जिसका अर्थ है विधि निर्माण अर्थात क्रमबद्ध भूगोल भौगोलिक विषयों पर नियम / विधि / model निर्माण को प्रेरित करता है जो सामान्यीकरण की विधियों पर आधारित होता है। क्रमबद्ध भूगोल में किसी एक ही चर का अध्ययन संपूर्ण भूक्षेत्र में किया जाता है इसलिए इसे एकल चरीय अध्ययन कहते है। जिससे यह स्पष्ट होता है कि क्रमबद्ध भूगोल में किसी एक विषय वस्तु को ही इसके विभिन्न शाखाओं में पढ़ा जाता है।

जबकि विशिष्ट भूगोल में किसी प्रदेश इकाई पर सभी भौगोलिक चरों का एकीकृत अध्ययन किया जाता है। अतः प्रादेशिक भूगोल समेकित, एकीकृत एवं समग्र अध्ययन है

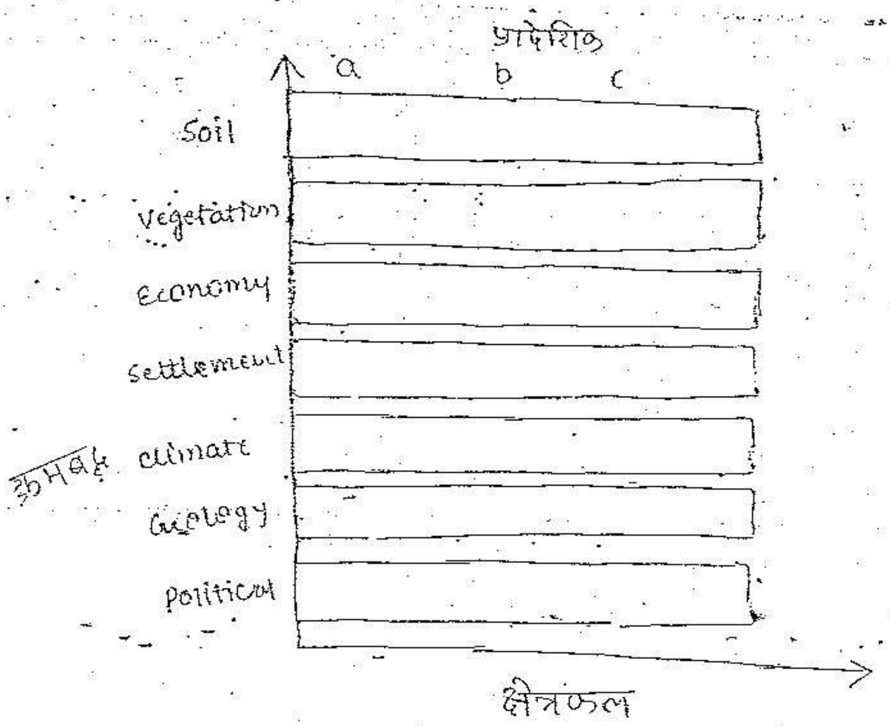

भूगोल में यह द्वैतवाद प्राचीन ग्रीक में भी पाया गया है जहाँ अरस्तू क्रमबद्ध भूगोल के जबकि Strabo प्रादेशिक भूगोल के समर्थक है। अरब भूगोलवेत्ता प्रादेशिक भूगोल के समर्थक रहे हैं तथा विश्व को विभिन्न प्रदेशों में Kishwar प्रदेशों में बांटा गया। Kishwar सांस्कृतिक प्रदेश होते हैं।

Kant क्षेत्रीय भूगोल के समर्थक थे तथा विशिष्ट भूगोल का समर्थन किया अतः इन्हें Shafer ने अपवादवाद का जनक कहा है

Humbolt क्रमबद्ध भूगोल के समर्थक थे परन्तु Ritter प्रादेशिक भूगोल के। Hettner के Chorology में प्रादेशिक भूगोल का समर्थन है। इन्होंने भूगोल को Chorological Science कहा पुनः Vidal की संकल्पना Pays भी प्रादेशिक भूगोल है जो एक river basin का सांस्कृतिक प्रदेश है।

Brunhs ने क्रमबद्ध भूगोल का समर्थन किया Herbertson ने विश्व को

प्राकृतिक प्रदेशो में बांटा जबकि Hartshorne
का क्षेत्रीय विभेदन पुनः प्रादेशिक भूगोल है। इनके
समकालीन Shafer क्षेत्रीय विभेदन के विरोधी है तथा
क्रमबद्ध भूगोल के समर्थक। इन्होने Nomothetic
उपागम को श्रेष्ठ माना है तथा भूगोल में मात्रात्मक
क्रांति को प्रेरित किया है।

क्षेत्रीय विभेदन :- 1939 में Hartshorne ने एवं प्रादेशिक संश्लेषण क्षेत्रीय विभेदन की संकल्पना अपनी पुस्तक Perspective in Geography में रखी क्षेत्रीय विभेदन का अर्थ है भूदृश्य को परिघटनाओं के संकेन्द्रण के आधार पर बाँटना एवं उनके विशिष्ट लक्षणों का अध्ययन करना तथा उन लक्षणों के कारकों का व्याख्या करना एवं समीपवर्ती क्षेत्रों से पृथकत्व के कारणों को समझना।

Hartshorne ने भूगोल की परिभाषा पृथ्वी के परिवर्तनशील भूदृश्य के बौद्धिक एवं वर्णनात्मक समझ से की है। इसके आधार पर प्रदेश निर्माण एवं उनका अध्ययन संभव है।

क्षेत्रीय विभेदन प्रादेशिक भूगोल का ही उपनाम है जिसे Chorography शब्द के द्वारा strabo वेरेनियस एवं कान्ट जैसे वैज्ञानिकों ने चिन्हित किया Ritter का Land shaft kunde वास्तव में क्षेत्रीय विभेदन ही है। इसी प्रकार Hattner का chorology भी प्रादेशिक विज्ञान है। Hattner ने ही Nomothetic एवं Idiographic के द्वैतभाव को विकसित किया तथा Idiography के समर्थक बने। Idiography का अर्थ है प्रादेशिक संश्लेषण।

प्रादेशिक संश्लेषण में एक समान चरों की के आधार पर प्रदेश का निर्माण किया जाता है। इसमें विभिन्न प्रतिमानों को एकीकृत कर एवं संश्लेषित कर एक पूर्ण चित्र की प्राप्ति की जाती है जो प्रदेश होता है।

Ex सवाना प्रदेश के लिए मृदा वर्षा तापमान, Vegetation, प्राणी जगत जैसे प्रतिमानों को संश्लेषित कर एक प्राकृतिक प्रदेश की कल्पना की जाती है। इसी प्रकार औद्योगिक प्रदेश भी बनते हैं।

अतः प्रादेशिक विश्लेषण, क्षेत्रीय विभेदन का ही एक अंग है जिसके द्वारा प्रदेश का स्वरूप निर्धारित होता है जबकि क्षेत्रीय विभेदन में इस प्रदेश की विशेषता एवं उसके कारकों की समीक्षा तथा समीपवर्ती प्रदेशों से तुलनात्मक अध्ययन किया जाता है।

Schaeffer

Shafer के तर्कों के आगे क्षेत्रीय विभेदन 1950-76 तक अस्वीकृत रहा तथा मात्रात्मक क्रांति की परिणति हुई परन्तु 1976 के बाद मानववाद के उदय के साथ ही क्षेत्रीय विभेदन को बल मिला क्योंकि

i) प्रादेशिक विकास एवं नियोजन तथा Backward area dev. के लिए उपयुक्त है।

ii) नये सामाजिक प्रसंग का उदय
Ex. भारत में नक्सलवाद क्षेत्रीय विभेदन से ही समझा जा सकता है।

iii) मानववादी विषयों को व्याख्याकृत करने का उपागम क्षेत्रीय विभेदन ही है।

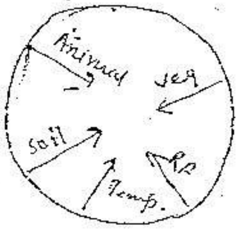

पर्यावरणवाद - मानव प्रकृति के अंर्तसंबंधो का अध्ययन है जिसके 2 उपागम है

① नियतिवादी दृष्टिकोण।
② संभव वादी दृष्टिकोण।

मात्रात्मक क्रांति (Quantitative Revolution)

मात्रात्मक क्रांति का अर्थ है भौगोलिक विषयो में Mathematical एवं सांख्यिकी प्रयोग के आधार पर मॉडल एवं विधि निर्माण। प्रमात्रीकरण भूगोल में पुरातन परंपरा रही है परन्तु 1950 से 76 तक के काल को Purton ने मात्रात्मक क्रांति की संज्ञा दी है क्योंकि सभी भूगोलवेत्ता अन्य उपागम को त्यागकर विधि निर्माण में कार्यरत रहे।

मात्रात्मक क्रांति के 3 मुख्य कारण थे -

i) भूगोल को उच्च शिक्षा के स्थान से पदच्युत US एवं Canada में किया गया क्योंकि इसमें विशेषीकरण नहीं था, सामान्यीकरण था शोध के विषय नहीं थे शोध का भाव था।

ii) भूगोल वेत्ता विवरणात्मक उपागम से ऊब चुके थे नयी दिशा की तलाश में थे

iii) भूगोल में प्रत्यक्षवाद का प्रभाव एवं शेफर के Nomothetic उपागम का समर्थन

iv) QR मुख्य रूप से प्रत्यक्षवाद से प्रभावित रही है। प्रत्यक्षवाद में सर्वेक्षण, शोध, अन्वेषण, निरीक्षण

जैसे क्रियाविधियाँ होती है जो विधि निर्माण को प्रेरित करता है।

v) QR में 3 उपागम प्रयुक्त हुये -

a) Spatial Analysis (स्थानिक विश्लेषण) इसमें ज्यामितीय विश्लेषण सम्मिलित होता है। Ex मध्य दूरी, अरीय दूरी etc..

b) Locational Analysis :- इसमें न्यूनतम व्यय पर उस बिन्दु की खोज की जाती है जहां अधिकतम लाभ प्राप्ति हो अथवा भौगोलिक परिघटनाओं का संकेन्द्रण Ex.. केन्द्र स्थल की प्राप्ति, वेबर में औद्योगिक अवस्थिति की प्राप्ति

c) System Analysis :- इसमें भौगोलिक तंत्र के घटक इकाइयों का अध्ययन किया जाता है तथा model निर्माण जैसे नगरीय आकारिकी

मात्रात्मक क्रांति के आधार निम्न है :-

a) गणितीय आधार :- इसमें Algebra, ज्यामिति, त्रिकोणमिति का बहुधा प्रयोग किया गया।

b) सांख्यिकी का प्रयोग :- इसमें mean, median, mode, coefficient of Variability, standard deviation, chi square, least square, etc का प्रयोग किया गया

c) समकालीन अर्थशास्त्र का प्रयोग :- इसमें Ricardo, Adam's Smith, Kane's के Principle का प्रयोग है।

Ex- वेबर का मॉडल, वान थ्यूनेन Model.

d) Physics का प्रयोग :- Newton का सार्वभौमिक गुरुत्व नियम का प्रयोग

Ex Stouffer, converse, Reilly के द्वारा

e) Cybernatics : इसका अर्थ है किसी तंत्र के स्वनियमित संघटक इकाइयों का अध्ययन

QR के तीन चरण हैं

i) 1848 - 1920 :- इसके अंतर्गत मात्रात्मक प्रयोग, अर्थशास्त्रीय विधियों से प्रभावित है।
Von Thunen model, वेबर Model, Smith's model

ii) 1920 से 1955 :- मुख्यतः बस्ती भूगोल में
Ex. Primary नगर सिद्धांत कोटि आकार नियम, केन्द्र स्थल सिद्धान्त

iii) 1956 - 76 - भूगोल के सभी विषयों
भौतिक भूगोल - Neil Harvey
— Climatology - Chorley & ~~Hitley~~ Perry
कृषि - वीबर
बस्ती भूगोल - LOSCH, Isard

अवस्थिति विश्लेषण पर भी Hagget ने प्रयोग किये। Chorley & Perry ने तंत्र विश्लेषण को विकसित किया।

iv) 1976 - वर्तमान :- यह critical revolution कहलाता है जो QR के कब्र पर उत्पन्न हुआ तथा मानववादी एवं कल्याणवादी दृष्टिकोण से ओत-प्रोत है।

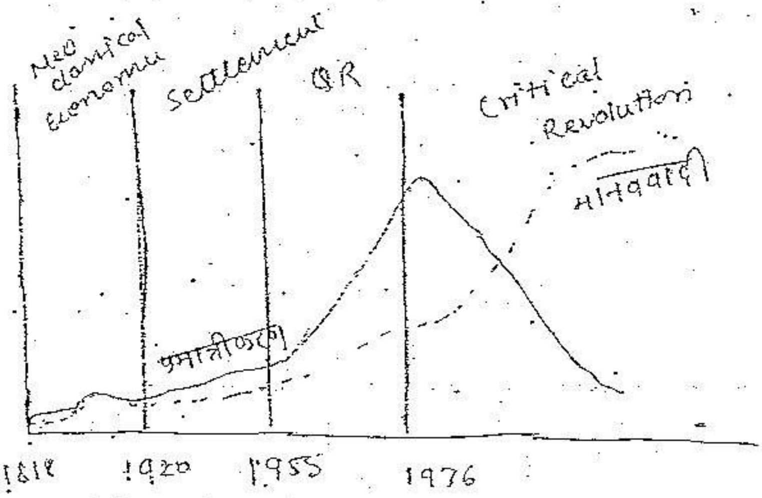

1976 के पश्चात QR के समर्थक स्वयं विरोधी बन गये। Neil Harvey ने कहा

'QR ने अपनी अवधि पूरी कर ली है तथा सीमान्त उपयोगिता ह्रास नियम लागू हो रहे हैं

गुण :- ① भूगोल को पुनः शोध विषय के रूप में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में स्थापित किया गया।

② भूगोल में विवरणात्मकता के स्थान पर वस्तुनिष्ठता का प्रवेश।

③. भूगोल के विषयों में संरचनात्मकता।

④ भौगोलिक विषयों में वैज्ञानिकता का प्रवेश।

⑤ ये model भूदृश्य के विश्लेषण के आधार बने

⑥ भूगोल को विज्ञान के रूप में स्थापित किया गया

दोष :- ① इन models में मानव को आर्थिक एवं विवेकशील मानव माना गया जो अनुचित था क्योंकि मानव के भावनात्मक, नैतिक मूल्य, सांस्कृतिक मूल्य की अवहेलना की गई

② मानव भूदृश्य पर एक बिन्दु मात्र रह गया तथा Robot की तरह व्यवहार करता है।

(3) ये सभी model Mechanistic model थे

(4) इन model की व्यवहारिकता सार्वभौमिक नहीं थी ये केवल आंशिक सत्य को प्रकट करते है।

(5) इन model का समय के साथ प्रासंगिकता खत्म हो जाता है ~~क्यों कि~~ क्योंकि भौगोलिक अदृश्य परिवर्तनशील है

Locational Analysis :-

अवस्थिति विश्लेषण QR की एक प्रमुख विधा है इसके अंतर्गत ज्यामितीय पद्धति के द्वारा भूदृश्य पर उस बिन्दु की प्राप्ति की जाती है जहां

i) अधिकतम लाभ प्राप्ति
ii) न्यूनतम लागत
iii) न्यूनतम दूरी प्राप्त हो -

अनुकूलतम अवस्थिति की खोज भूगोल वेत्ताओं की प्रमुख विधि है

कृषि अवस्थिति विश्लेषण ·
केन्द्र स्थल विश्लेषण
औद्योगिक अवस्थिति का विश्लेषण

अवस्थिति विश्लेषण के समर्थक P. Haggett ने जिन्होंने अपनी पुस्तक Locational analysis of geography में भूगोल का मुख्य उद्देश्य अवस्थिति विश्लेषण बतलाया परन्तु अवस्थिति विश्लेषण को पूंजीवाद को बढ़ावा मिलता है एवं आर्थिक विषमता बढ़ती है क्योंकि आर्थिक क्रियाओं का केन्द्रीकरण एवं लाभ प्राप्ति का बिन्दु प्राप्त होता है।

गुण एवं दोष :- QR के ही है।

System Anaysis (तंत्र विश्लेषण)

तंत्र विश्लेषण भूगोल में जैव विज्ञान से प्रविष्ट है जिसमें जैविक इकाई के संरचनात्मक संघटकों का एवं उनके अंतर्संबंधों का अध्ययन किया जाता है। इसका प्रयोग Buterlanfy ने सर्वप्रथम किया इसे भूगोल में General System Theory के रूप में Chorley एवं Berry ने प्रयुक्त किया तथा यह मात्रात्मक क्रांति की प्रमुख विधा है।

तंत्र विश्लेषण प्रत्यक्षवाद एवं Functionalism जैसे चिंतन से प्रभावित है। प्रकार्यात्मकतावाद में किसी एक इकाई के विभिन्न संघटकों के क्रियात्मकता एवं उनके अंतर्संबंधों को विश्लेषित किया जाता है। Physics की शाखा cybernetics का तंत्र विश्लेषण पर विशिष्ट प्रभाव है।

तंत्र से तात्पर्य उस एकीकृत समेकित पूर्ण से है जो विभिन्न क्रियात्मक संघटकों से निर्मित होता है जहां प्रत्येक संघटक अथवा तत्व एक दूसरे से जुड़े होते हैं अर्थात एक तंत्र के अंतर्गत 3 घटक होंगे।

i) Element (तत्व): जो स्वयं क्रियात्मक होते हैं तथा प्रवाह एवं प्रकार्यात्मकता से एक दूसरे से संबद्ध होते हैं।

ii) Link: link वह प्रवाह है जो 2 तत्वों को जोड़ती है।

iii) पर्यावरण: जो तंत्र को Regulate करती है। एवं तंत्र के Functioning में सहयोग करती है।

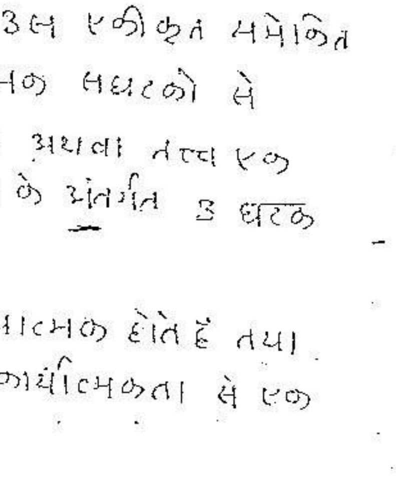

तंत्र के प्रकार -

a) Morphological :- अजैविक अथवा भूभौतिक तंत्रो को आकारिक तंत्र कहते है।

Ex. Mountain - river system.

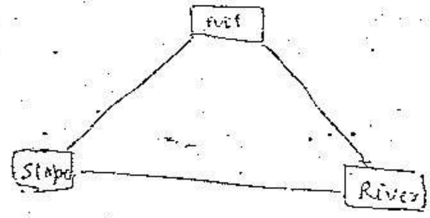

b). Cascading (सिपिका युक्त) :- जब एक साथ कई subsystem कार्य कर रहे हो तथा उनके मध्य प्रवाह कायम हो

Ex- औद्योगिक तंत्र. Mining, Transportation, Factory, Market सभी उपतंत्र है जो आपस में प्रवाह से संबद्ध है।

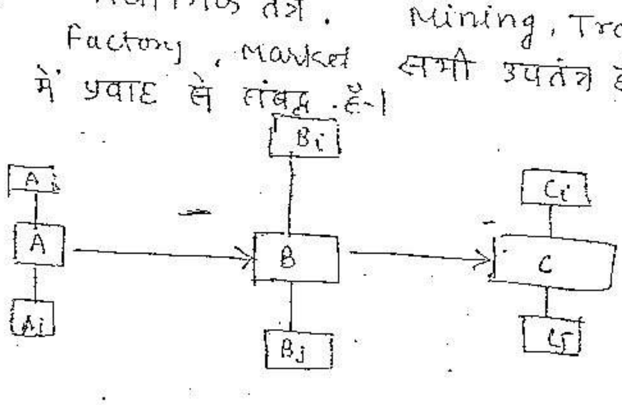

c) Process Response system :- इसके अंतर्गत Ecosystem होते है जिसमें morphological एवं cascading दोनो के गुण होते है तथा किसी भी अभिक्रिया का प्रतिउत्तर उत्पन्न होता है।

d) खुला तंत्र :- जिसमें ऊर्जा, पोषक तत्व, वस्तु सेवा का अंतः प्रवाह एवं बाह्य प्रवाह कायम रहता है।

e) बंद तंत्र :- अंतःप्रवाह - बाह्य प्रवाह से वंचित तंत्र
Ex: Tribal culture

सभी बंद तंत्र मृत हो जाते है।

संबंध (Relation) :- तंत्र विश्लेषण में 5 प्रकार के अंतर्संबंध होते है

i) Simple Series :- इसमें 1 element दूसरे को प्रभावित करता है परन्तु स्वयं प्रभावित नहीं होता
Ex - सिंचाई एवं कृषि उत्पादकता

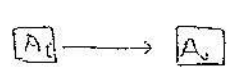

ii) Parallel Relationship :- एक तत्व दूसरे को प्रभावित करता है तथा स्वयं भी प्रभावित होता है।
Ex- जलवायु - मृदा वनस्पति तंत्र

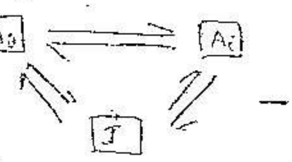

iii) Feed back Relationship :- यदि कोई तत्व अपने क्रियात्मकता से स्वयं को प्रभावित कर ले

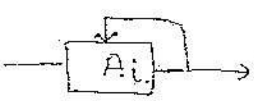

Feed back 3 प्रकार के होते है :

1. Negative Feed back :- Ex- Pollution
2. Positive Feed back :- Ex दलहन - मृदा का संबंध
3. Loop Feedback :- जब स्वक्रिया से 2 अन्य इकाइयों को प्रभावित कर

स्वयं प्रभावित होता है।

d) simple compound :- यदि simple series व Parallel series एक साथ प्राप्त हों।

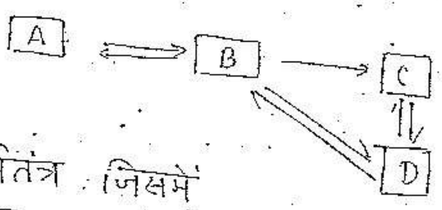

Ex - सौर्यतंत्र जिसमें गुरुत्व समानांतर संबंध है और प्रकाश किरण simple series है।

e) complex compound :- जब a+b+c एक साथ प्राप्त हो।

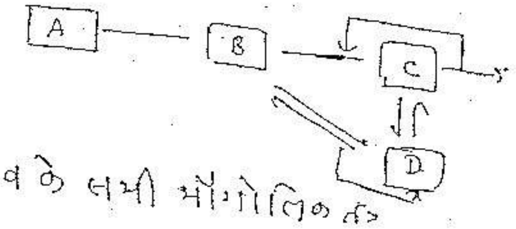

विश्व के सभी भौगोलिक तंत्र

भूगोल में तंत्र विश्लेषण का उदाहरण :

केन्द्र स्थल सिद्धान्त :- सभी केन्द्र स्थल एवं विभिन्न पदानुक्रम की बस्तियाँ आपस में सेवा एवं वस्तु के प्रवाह से जुड़े हैं।

+ CPT से 1-2 para.

गुण दोष - वही है जो QR के है।

व्यवहारवाद :- व्यवहारवाद मानववादी दृष्टिकोण है जो मात्रात्मक क्रांति मे मानव के भावनात्मक एवं नैतिक मूल्यों के अस्वीकृत करने की प्रवृत्तियों का विरोध करता है। परन्तु यह प्रत्यक्षवाद का विरोधी नही है। बल्कि प्रमाणीकरण का समर्थक है। इस अर्थ में अलग है कि व्यवहारवाद में प्रति व्यक्ति विश्लेषण महत्त्वपूर्ण हो जाता है तथा प्रत्येक व्यक्ति के भावनाओं आकांक्षाओं, निर्णय लेने की क्षमता के आधार पर सर्वेक्षण करता है।

व्यवहारवादी दृष्टिकोण 1960 के दशक में Kirk ने भूगोल में स्थापित किया। व्यवहारवाद मनोविज्ञान समाजशास्त्र मानवविज्ञान एवं अन्य मानववादी चिंतनो से निर्मित Multidisciplinary (बहुविषयक) चिंतक है जिसके केन्द्र में मानव है।

व्यवहार का अर्थ है मानव के आंतरिक अनुभूतियो का बाह्य निस्पंदन। ~~व्यवहार का~~

model (व्यवहार का)

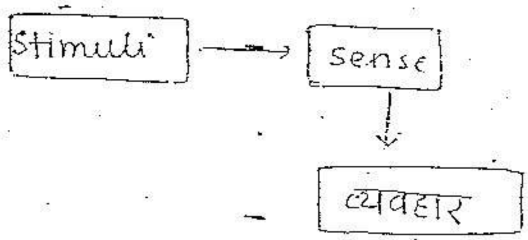

व्यवहारवाद में 2 प्रकार के पर्यावरण माने गये है:

i) बाह्य पर्यावरण / भौतिक पर्यावरण
ii) आंतरिक / बौद्धिक पर्यावरण

Porteous ने तीसरे पर्यावरण, सांस्कृतिक पर्यावरण को भी माना है जो निर्णय लेने की क्षमता एवं व्यवहार को प्रभावित करता है।

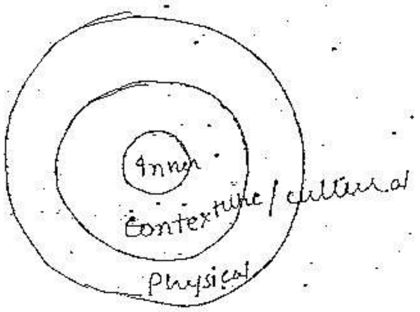

Downs ने व्यवहार वाद में एक मॉडल प्रस्तुत किया। Physical world में सूचना निहित है जो Mental Perceptor एवं mental filter से होती हुई मूल्य तंत्र में प्रवेश करती है जिससे एक ~~मानक~~ मानसिक चित्र उत्पन्न होता है जो व्यवहार को उत्पन्न करता है तथा यह व्यवहार पुनः भौतिक पर्यावरण की ओर प्रकट होता है।

मनुष्य के व्यवहार को प्रमाणीकृत नहीं किया जा सकता क्योंकि प्रत्येक समरूपी दशाओं में मानव व्यवहार पृथक-पृथक हो सकता है। इस कारण से व्यवहारवादी model बनाने में असफल रहे। तथा व्यवहारवादी models में भी मानव एक मशीन अथवा Robot की तरह कार्य करता है।

Pred का व्यवहारवादी संभाव्यवादी मॉडल भविष्य के पूर्व घोषणा में असफल रहा अतः व्यवहारवाद उत्तर व्यवहारवाद के रूप में मानववाद में संश्लिष्ट हो गया तथा वर्तमान में यह मानववाद ही है।

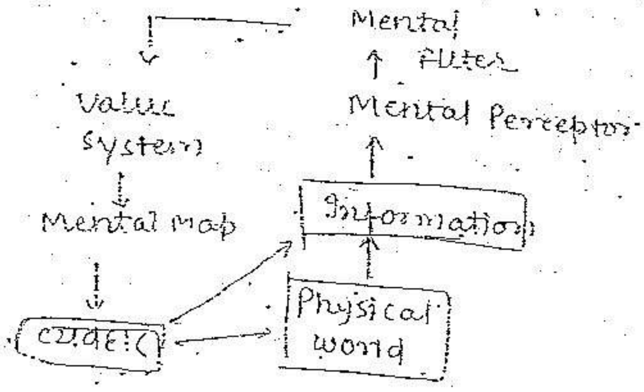

उग्र सुधारवाद (Radicalism) :- उग्र सुधारवाद US में 3 कारणों से उत्पन्न हुआ। -

i) वियतनाम युद्ध में US की हार जिससे अमेरिकी युवक छोटी शक्ति के द्वारा बड़ी शक्ति की पराजय से प्रेरित हुये।

ii) रंगभेद नीति के विरुद्ध एवं नगरीय Ghettos में अश्वेतों की दशा।

iii) US में महिलाओं की सामाजिक स्थिति।

अर्थात Radicalism में उच्च मानववादी, कल्याणवादी दृष्टिकोण है। यह मार्क्सवाद से प्रभावित चिंतन है। जिसने पूँजीवाद को सभी असमानता एवं भेदभाव, पर्यावरणीय विनाश का कारण माना गया है।

Radicalism ऐतिहासिक भौतिकवाद पर आधारित है तथा पूँजीवाद एवं वर्ग विभेद का विरोधी। अतिपर्यावरणीय दोहन पूँजीवाद की प्रवृत्तियाँ है तथा सामाजिक असमानता का कारक भी।

इसके प्रचारक Prof Peet थे जिन्होंने Antipode नामक पत्रिका के माध्यम से उग्र सुधारवादी विचारों को फैलाया। प्रमुख विधियों में भाषण, लेख, पत्रिका, विरोध प्रदर्शन, जुलूस, सभा, Pamplets etc थे उग्र सुधारवादी किसी अन्य वृहद योजना का निर्माण नहीं कर सके अतः विफल रहे एवं 1976 के बाद इनका विलय कल्याण एवं मानववाद में हो गया।

उग्रसुधारवाद मानववाद में निहित मात्रात्मक क्रांति का विरोधी प्रत्यक्षवाद के विरुद्ध 1960's का एक प्रमुख चिंतन है जो नारीवाद का समर्थक रंगभेद का विरोधी, असमानता एवं अमानवीयता का विरोधी रहा है।

मानववाद

मानववाद का उदय QR के विफलता पर हुआ। मानववादी दृष्टिकोण प्रत्यक्षवाद एवं QR का विरोधी है तथा मानव के भावनात्मक नैतिक मूल्यों निर्णय लेने की क्षमता को विशिष्ट महत्त्व देता है।

भूगोल की परिभाषा मानववाद में इस प्रकार है - " भूगोल अध्ययन है पृथ्वी सतह का मानव के गृह के रूप में अर्थात मानववाद के केन्द्र में सिर्फ मानव है तथा यह व्यक्तिपरक तथा समष्टिपरक दोनों ही विश्लेषण करता है। अंतर्विषयी प्रवृत्ति का है एवं मानव कल्याण की भावना से ओत प्रोत है। -

मानववाद 4 सिद्धान्तों पर आधारित है,

(1) Human agency - मानव एक कर्ता के रूप मे - मानव निष्क्रिय नहीं है न ही दास बल्कि सक्रिय क्रियाशील इकाई है जो स्थूल प्रकृति पर कार्य करता है। यह सिद्धान्त संभववाद से प्रेरित है

(2) Human Awareness : मानव भौगोलिक ज्ञान से युक्त है तथा उसे अपने प्रगति आवश्यकताओं के प्रति जागरूकता है। यह अस्तित्ववाद से प्रभावित Principle है।

(3) Human Creativity (सृजनात्मकता): मानव Technology का विकास करने में सक्षम है तथा वह उपकरणों के माध्यम से प्रकृति के प्रतिरोध को नष्ट करता है। यह उपकरण निर्माण उसके बौद्धिक एवं वैज्ञानिक सोच का प्रतीक है। यह संकल्पना idealism से प्रभावित है।

4). Human consciousness (सचेतना):- मानव के अंदर एक बौद्धिक सचेतना होती है जो निर्णय को प्रभावित करती है। यह व्यवहारवादी चिंतन के समकक्ष है। मनुष्य का व्यवहार Private एवं Public में अलग-2 होता है।

मानववाद Kirk एवं Tuan के साथ 1970's के दशक में भूगोल में प्रविष्ठ हुआ एवं वर्तमान में मानववाद की अवहेलना की जाती है।

(49)

कल्याणवाद

कल्याणवाद का उदय मानववाद के समकक्ष हुआ है तथा ये अन्य सुधारवाद, व्यवहारवाद, मानववाद, अस्तित्ववाद, आदर्शवाद; से अनुप्राणित है।

कल्याणवाद में मूल सिद्धान्त है who gets what where & how.

who gets what का अर्थ है सामाजिक विषमता का विश्लेषण तथा वर्ग विभेद एवं आर्थिक असमानता -ओं का विश्लेषण → where का अर्थ है living condition एवं social well being जबकि how का अर्थ है Right-to work, economic security एवं आर्थिक लाभ का न्यायिक वितरण

"कल्याणवाद Approach है कोई चिन्तन नहीं" एवं यह विश्व में निम्नांकित आदर्शवादी लक्ष्य की प्राप्ति करना चाहता है:

1. Gender Equality :-
2. आर्थिक विभेद को खत्म करना
3. रंगभेद का विरोध
4. पर्यावरण संरक्षण
5. संपोषणीय विकास
6. प्राकृतिक अधिकार एवं न्याय का रक्षण

भूगोल में कल्याणवाद Smith के 1976 में प्रकाशित welfare geography से उत्पन्न होती है। वर्तमान में कल्याणवाद की धारा के अंतर्गत ① भूगोल एवं आतंकवाद,

② भूगोल एवं प्रादेशिक संतुलन

③ भूगोल एवं समकालीन समस्यायें, आपदा प्रबंधन

④ भूगोल एवं अपराधशास्त्र की ओर है।